# आवश्यक निर्देश :–

1. इस पाठ्यक्रम को केवल वर्ष 2013 से पूर्व प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी ही देखें।
2. वर्ष 2013 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी न्यू सेलैबस के कॉलम में देखें।
3. सप्तम एवं अष्टम सेमेस्टर में दो–दो थ्योरी पेपर है जो षष्ठम सेमेस्टर पाठ्यक्रम के नीचे मिलेगा।
4. सहायक विषय लोक संगीत एवं सुगम संगीत बी. म्यूज अष्ठम सेमेस्टर के नीचे मिलेगा।
5. ओल्ड सेलैबस की स्कीम (अंक योजना) पूरानी ही रहेगी।

**कृपया उपर्युक्त निर्देशों को ध्यान से पढ़कर इनके अनुसार पाठ्यक्रम का संचालन किया जाये अन्यथा इस विषय पर कोई तकनीकी परेशानी होने पर वि.वि. जिम्मेदार नहीं होगा।**

# संगीत कला प्रवेशिका प्रथम
## गायन/स्वरवाद्य
## मौखिक

पूर्णांक : 50

1. संगीत की परिभाषा व सामान्य परिचय।
2. स्वर (शुद्ध, विकृत), सप्तक (मंद्र, मध्य, तार), थाट, वर्ण, अलंकार (पल्टा), आरोह–अवरोह, पकड व राग की परिभाषाऐं।
3. यमन, भैरव व भूपाली रागों के थाट, जाति, लगने वाले स्वर, वादी–संवादी एवं गायन समय की जानकारी।
4. सरल अलंकारों का ज्ञान।
5. त्रिताल, कहरवा और दादरा तालों का परिचय एवं ज्ञान।
6. भातखण्डे स्वरलिपि एवं ताल चिन्हों का ज्ञान।
7. अपने वाद्य का साधारण ज्ञान।

## प्रायोगिक परीक्षा

समय – 10 मिनिट पूर्णांक : 125

1 बिलावल, भैरव व कल्याण थाट में दस–दस अलंकारों का गायन।

2 यमन, भैरव और बिलावल रागों मे स्वरमालिका, लक्ष्णगीत, मध्य लय ख्याल का गायन। अपने वाद्य पर इन रागों में मध्य लय की रचना/गत का (स्थायी, अंतरा सहित) वादन।

## संदर्भ ग्रंथ


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 1 से 3 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 1 एवं 2 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. संगीत शास्त्र – श्री एम. बी. मराठे
7. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा

## संगीत कला प्रवेशिका अंतिम
## गायन/स्वरवाद्य
## संगीत शास्त्र

समय 3 घण्टे पूर्णांक : 50

1 संगीत शब्द की व्याख्या एवं स्पष्टीकरण, संगीत की पद्धतियॉ (उत्तर भारतीय एवं कर्नाटक) की जानकारी। संगीत के प्रकारों (शास्त्रीय, भाव, चित्रपट एवं लोक संगीत आदि) का परिचय।

2 हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के दस थाटों के नाम एवं उनके स्वरों की जानकारी । थाट और राग का तुलनात्मक अध्ययन। आश्रय रागों की संक्षिप्त जानकारी।

3 निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय विवरण– राग यमन, भैरव, भूपाली, खमाज, काफी।

4 लय (विलम्बित, मध्य, द्रुत, दुगुन और चौगुन) मात्रा, विभाग, खाली,, भरी, सम एवं आवर्तन की जानकारी। त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा और झपताल तालों का शास्त्रीय परिचय एवं उनका ताललिपि में लेखन।

5 पं. भातखण्डे जी की स्वरलिपि पद्धति का सामान्य ज्ञान। अपने वाद्य का संक्षिप्त परिचय एवं उसके विभिन्न अवयवों की जानकारी।

## संगीत कला प्रवेशिका अंतिम
## गायन/स्वरवाद्य
## प्रायोगिक परीक्षा

समय – 20 मिनिट पूणांक : 125

1 पिछले वर्ष के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।
2 कल्याण, भैरव, खमाज एवं काफी थाटों में दस–दस अलंकारों का गायन।
3 पाठ्यक्रम के राग– यमन, भैरव, खमाज, काफी एवं भूपाली।
   1. पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका, लक्षण गीत। (गायन के विद्यार्थियों के लिये)
   2. पाठ्यक्रम के एक राग में विलम्बित रचना। (ख्याल का गायन अथवा मसीतखानी गत का वादन)
   3. पाठ्यक्रम के रागों में मध्यलय की एक रचना (ख्याल गायन अथवा रजाखानी गत का पॉच–पॉच तानों/तोडों सहित वादन)
4 आकाशवाणी द्वारा मान्य जनगणमन का स्वर लय में गायन/वादन।
5 तीनताल, एकताल, कहरवा, दादरा व झपताल तालों का हाथ से ताली देकर दुगुन सहित प्रदर्शन।

## संदर्भ ग्रंथ


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 1 से 3 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 1 से 2 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. संगीत शास्त्र – श्री एम. बी. मराठे
7. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा

# संगीत कला मध्यमा प्रथम
## गायन/स्वरवाद्य
## संगीत शास्त्र

समय 3 घण्टे पूर्णांक : 75

1. प्रथमा के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।

2. वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, मींड, सूत, घसीट, आंदोलन, कण, बोल–आलाप, तान, बोल–तान, राग की जाति (औडव, षाडव, सम्पूर्ण) का सामान्य परिचय। ध्वनि, नाद एवं श्रुति की परिभाषा, 22 श्रुतियों के नाम एवं उनमें शुद्ध विकृत 12 स्वरों की स्थापना।

3. गीत के अवयव (स्थायी, अंतरा, संचारी, आभोग) ध्रुपद, धमार, ख्याल, तराना, लक्षणगीत, सरगम (स्वरमालिका) मसीतखानी एवं रजाखानी गतों की संक्षिप्त जानकारी। पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर एवं पं. विष्णु नारायण भातखण्डे की संक्षिप्त जीवनी एवं सांगीतिक योगदान। पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी की स्वरलिपि पद्धति का अध्ययन।

4. निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचय :–
   आसावरी, अल्हैया बिलावल, दुर्गा, (बिलावल थाट) वृंदावनी सारंग, देस एवं तिलक कामोद।

5. पाठ्यक्रम के उपर्युक्त रागों की बंदिश का स्वरलिपि में लेखन।
   **नोट : यमन एवं भैरव की बन्दिश का स्वरलिपि में लेखन एवं उनका शास्त्रीय परिचय शास्त्र की लिखित परीक्षा में नहीं पूछा जावेगा।**

6. ताल के दुगुन एवं चौगुन लय की सामान्य जानकारी। त्रिताल, एकताल, झपताल, चौताल, सूलताल, रूपक एवं तिलवाडा ताल के ठेकों का शास्त्रीय परिचय एवं उनका ताललिपि में लेखन।

# संगीत कला मध्यमा प्रथम
## गायन/स्वरवाद्य
## प्रायोगिक परीक्षा

समय– 30 मिनिट पूर्णांक : 125

1 पिछले वर्ष के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।

2 पाठ्यक्रम के राग – आसावरी, अल्हैया बिलावल, दुर्गा (बिलावल थाट), वृन्दावनी सारंग, देस एवं तिलक कामोद।

(अ) पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका, लक्षणगीत का गायन। (गायन के विद्यार्थियों हेतु)

(ब) पाठ्यक्रम के दो रागों में विलम्बित ख्याल गायन। (वाद्य के विद्यार्थियों हेतु मसीतखानी गत का आलाप तानों एवं तोडे सहित प्रदर्शन)

(स) पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में मध्यलय रचना (ख्याल गायन), रजाखानी गत का आलाप एवं पॉच तानों एवं तोडे सहित प्रदर्शन।

(द) पाठ्यक्रम के किसी एक राग में ध्रुपद (दुगुन और चौगुन सहित) एक तराना तथा एक भजन अथवा अपने वाद्य पर तीनताल से पृथक अन्य किसी ताल में मध्यलय की रचना का प्रदर्शन।

3 आकाशवाणी द्वारा मान्य वन्दे मातरम् तथा देशभक्ति गीत का स्वरलय में गायन। वाद्य के विद्यार्थियों द्वारा इनका वादन तथा किसी धुन का प्रदर्शन।

4 पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का हाथ से ताली देकर दुगुन सहित प्रदर्शन।

तीनताल, एकताल, झपताल, चौताल, सूलताल, रूपक एवं तिलवाडा

## संदर्भ ग्रंथ


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 1 से 3 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 1 से 2 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. संगीत शास्त्र – श्री एम. बी. मराठे
7. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा

# संगीत कला मध्यमा अंतिम
## गायन/स्वरवाद्य
## संगीत शास्त्र

समय 3 घण्टे पूर्णांक : 75

1 पिछले पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।

2 तानों के प्रकार। तान व तोडा की परिभाषा तथा तान एवं तोडा में अंतर।
पूर्वराग, उत्तरराग, सन्धिप्रकाश एवं परमेल प्रवेशक रागों की संक्षिप्त जानकारी।

3 भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति की विस्तृत जानकारी। गायक अथवा वादक (तंत्री वादक/सुषिर वादक) के गुण दोषों का परिचय।

4 अमीर खुसरो, स्वामी हरिदास, तानसेन तथा मानसिंह तोमर का जीवन परिचय एवं उनका सांगीतिक योगदान।

5 मुगलकाल से अब तक के संगीत का संक्षिप्त इतिहास।

6 निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचय :–
बिहाग, केदार, हमीर, बागेश्री, भीमपलासी, जौनपुरी, भैरवी एवं तोडी

7 पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में रचनाओं का भातखण्डे स्वरलिपि में लेखन।

8 चौताल, तीव्रा, तिलवाडा, दीपचन्दी, झूमरा, आडाचौताल और धमार के ठेकों का ठाह, दुगुन एवं चौगुन लयों में ताललिपि में लिखना।

## प्रायोगिक परीक्षा

समयः– 30 मिनिट पूर्णांक–125

1. पिछले वर्ष के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।
2. पाठ्यक्रम के राग– विहाग, केदार, हमीर, बागेश्री, भीमपलासी, जौनपुरी, भैरवी तथा तोड़ी,।
   (अ) पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका लक्षणगीत का गायन। (गायन विद्यार्थियों हेतु)
   (ब) पाठ्यक्रम के किन्ही चार रागों में विलम्बित रचना (ख्याल/मसीतखानी) का आलाप, तानों सहित प्रदर्शन।
   (स) पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में मध्यलय रचना (ख्याल/रजाखानी गत ) का आलाप एवं पांच तानों सहित प्रदर्शन।
   (द) पाठ्यक्रम के किसी एक राग में ध्रुपद (दुगुन और चौगुन सहित ) एक धमार, दो तराने तथा एक भजन अथवा अपने वाद्य पर तीनताल से पृथक अन्य ताल में एकमध्य लय रचना का तानों सहित प्रदर्शन।
3. देशभक्ति गीत का अथवा किसी सुगम संगीत की रचना का स्वरलय में गायन/वादन अथवा अपने वाद्य पर धुन का प्रदर्शन।
4. पाठ्यकम के निम्नलिखित तालों का हाथ से ताली देकर ठाह, दुगुन एवं चौगुन सहित प्रदर्शन। चौताल, तीव्रा, तिलवाडा, दीपचन्दी, झूमरा, आड़ाचौताल और धमार।

## संदर्भ ग्रंथ


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 1 से 3 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 1 से 2 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. संगीत शास्त्र – श्री एम. बी. मराठे
7. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा

# संगीत कला विद प्रथम
## गायन/स्वरवाद्य
## प्रथम प्रश्न–पत्र (शास्त्र)

समय – 3 घण्टे पूर्णांक : 75

1. ध्वनि (सांगीतिक ध्वनि और शोर) नाद और उसके प्रकार, नाद की तीव्रता (Intensity) तारता (Pitch) गुण (Timbre) कालमान (Duration) कंपन (Vibration) आवृत्ति (Frequency) कम्पविस्तार (Amptitude) डोल (Beat) उपस्वर (Overtone) सेमीटोन, माईनर टोन, मेजर टोन का परिचय।

2. डायटोनिक स्केल, नेचुरल स्केल, टेम्पर्ड स्केल का सामान्य अध्ययन।
3. हिन्दुस्तानी व कर्नाटक सप्तकों का अध्ययन। ग्रह आदि दस राग लक्षणों का परिचय।
4. राग विस्तार में वादी, संवादी, अनुवादी एवं विवादी अल्पत्व, बहुत्व एवं न्यास स्वरों का महत्व। गमक के लक्षण एवं प्रकारों का अध्ययन।
5. भारतीय मतानुसार वाद्य वर्गीकरण का सामान्य परिचय। गायन के परीक्षार्थियों के लिये तानपुरा और वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये अपने–अपने वाद्य का संक्षिप्त ऐतिहासिक अध्ययन।
6. सदारंग–अदारंग, गोपाल नायक, भास्कर बुआ बखले, उस्ताद अब्दुल करीम खॉ, बाबा उस्ताद अलाउद्दीन खॉ, उस्ताद हाफिज अली खॉ, पं. राजा भैया पूछवाले का जीवन परिचय एवं उनका सांगीतिक योगदान।

# संगीत कला विद प्रथम
# गायन/स्वरवाद्य
# द्वितीय प्रश्न पत्र
# संगीत के क्रियात्मक सिद्धांत

समय – 3 घण्टे पूर्णांक : 75

1. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचय एवं पिछले पाठ्यक्रमों के रागों से इनका तुलनात्मक अध्ययन। मालकौंस, देशकार, कामोद, रामकली, मारवा, बहार, शंकरा, पूर्वी एवं शुद्धकल्याण।
2. निम्न अ एवं ब को भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लिखने का अभ्यास।

   (अ) गायन के परीक्षाथियों के लिये –

   पाठ्यक्रम के चार रागों में (आलाप तथा तानों साहित) विलम्बित रचना।

   पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक मध्यलय ख्याल का गायन (आलाप एवं तानों सहित)।

   एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन और चौगुन) एवं एक तराना।

   (ब) वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये –

   पाठ्यक्रम के चार रागों में एक–एक विलम्बित गत अथवा एक मसीतखानी गत।

   पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक मध्यलय अथवा रजाखानी गत अथवा द्रुत लय की रचना (आलाप तथा तानों/तोडों सहित)

   पाठ्यक्रम के किसी एक राग में तीनताल से पृथक अन्य ताल में रचना का लेखन।

3 मींड, सूत (अनुलोम–विलोम) मुर्की, खटका, घसीट, जमजमा, कृन्तन, गमक, झाला, तोडा, आविर्भाव, तिरोभाव की सामान्य जानकारी। गायन के संदर्भ में आलाप, नोम–तोम का आलाप तथा बोल आलाप एवं स्वर वाद्य के संदर्भ में आलाप, जोड, झाला का अध्ययन। गायन–वादन में प्रचलित आलापचारी की जानकारी।

4. निम्नलिखित तालों को बोल एवं ताल चिन्हों के साथ ठाह, तिगुन और चौगुन में लेखन।

   तीनताल, एकताल, चौताल, झपताल, धमार, सूलताल, रूपक, तीव्रा, तिलवाडा, दीपचन्दी, झूमरा एवं आडाचौताल।

5. संगीत से संबंधित विविध विषयों पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लेखन।

# संगीत कला विद प्रथम
## गायन/स्वरवाद्य
## प्रायोगिक परीक्षा

समय – 40 मिनिट पूर्णांक : 150

1. पिछले वर्ष के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।
2. पाठ्यक्रम के राग–मालकौंस, कामोद, शंकरा, पूर्वी, शुद्धकल्याण, मारवा, रामकली, बहार एवं देशकार।
   (अ) पाठ्यक्रम के रागों में किन्ही चार रागों में विलम्बित ख्याल (आलाप, तानों सहित) अथवा विलम्बित गत/ख्याल अथवा मसीतखानी गत (विस्तृत आलाप, स्थायी, अंतरा, तानों/तोडों, तिहाई एवं झाला सहित) का प्रदर्शन।
   (ब) पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में मध्यलय रचना, ख्याल (आलाप, बोल–तानों एवं तानों सहित) का प्रदर्शन अथवा मध्यलय रचना/रजाखानी गत (आलाप एवं तानों/तोडों, तिहाई सहित) का अपने वाद्य पर वादन।
   (स) पाठ्यक्रम के किसी एक राग में ध्रुपद (दुगुन, तिगुन, चौगुन सहित), एक धमार (दुगुन, तिगुन, चौगुन सहित) तथा एक तराना का गायन, अथवा अपने वाद्य पर तीनताल के अतिरिक्त अन्य ताल में एक रचना का आलाप एवं तानों/तोडों तिहाई सहित प्रदर्शन।

3 सुगम संगीत की किसी रचना का स्वरलय में गायन अथवा अपने वाद्य पर प्रदर्षन।

4 पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का ताली देकर प्रदर्शन (ठाह, दुगुन व चौगुन साहित )
तीनताल, एकताल, चौताल, झपताल, रूपक, तीव्रा, तिलवाडा, दीपचन्दी, झूमरा, आडाचौताल और धमार।

## संदर्भ ग्रंथ


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन

# संगीत कला विद् (अंतिम वर्ष)
## गायन/स्वरवाद्य
## प्रथम प्रश्न पत्र

समय 3 घण्टे पूर्णांक : 75

1. गांधर्व गान एवं मार्ग–देशी का सामान्य परिचय। निबन्ध एवं अनिबद्ध गान की सामान्य जानकारी एवं अनिबद्ध के अंतर्गत रागालाप्ति और रूपकालाप्ति के भेद–प्रभेदों का अध्ययन।

2. ग्राम और मूर्च्छना के लक्षण एवं भेद की सामान्य जानकारी।

3. भरत के श्रुति निदर्शन की चतुःसारणा का परिचय।

4. वीणा के तार पर पं. अहोबल द्वारा शुद्ध–विकृत स्वरों की स्थापना और पं. श्री निवास द्वारा उनका स्पष्टीकरण।

5. थाट राग वर्गीकरण का सामान्य परिचय। शुद्ध, छायालग एवं संकीर्ण रागों का वर्गीकरण समय–सिद्धांत के अनुसार रागों का वर्गीकरण।

6. गणितानुसार हिन्दुस्तानी संगीत के 32 और कर्नाटक संगीत के 72 मेलों की निर्माण विधि स्वरों की संख्या के आधार पर एक थाट से 484 राग बनाने की विधि।

7. जीवनियॉ एवं सांगीतिक योगदान :–
   उस्ताद फैयाज खॉ, उस्ताद बडे गुलाम अली खॉ, पं. ओमकारनाथ ठाकुर, पं. रविशंकर, उ. बिस्मिल्लाह खॉ।

# संगीत कला विद् (अंतिम वर्ष)
## गायन/स्वरवाद्य–द्वितीय प्रश्न पत्र
## संगीत के क्रियात्मक सिद्धांत

समय 3 घण्टे पूर्णांक : 75

1. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचय एवं पिछले पाठ्यक्रमों के रागों से तुलनात्मक अध्ययन :– छायानट, पूरियाधनाश्री, जयजयवन्ती, वसंत, सोहनी, पूरिया, ललित, गौडसारंग एवं कालिंगडा।

2. निम्न अ एवं ब को भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लिखने का अभ्यास।

   (अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिये :–

   पाठ्यक्रम के चार रागों का आलाप तथा तानों सहित प्रदर्शन।

   पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक मध्यलय ख्याल (आलाप तथा तानों सहित)

   एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन, तिगुन एवं चौगुन सहित) एवं एक तराना

   (ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये :–

   पाठ्यक्रम के चार रागों में एक–एक विलम्बित गत अथवा मसीतखानी गत (आलाप, तानों, तोडों सहित)

   पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक मध्यलय अथवा रजाखानी गत (आलाप, तानों, तोडों सहित )

   पाठ्यक्रम के किसी एक राग में तीनताल के अतिरिक्त अन्य ताल में एक रचना।

3. आड, कुआड एवं बिआड की परिभाषा व परिचय। तीनताल, दादरा, कहरवा, झपताल एवं एकताल के ठेकों को आड की लयकारी (3/2) में लिखने का अभ्यास।

4. स्वरलिपि एवं उसकी उपयोगिता। भारत में प्रचलित स्वरलिपियों का सामान्य ज्ञान।

5. संगीत से संबंधित विविध विषयों पर लगभग 500 शब्दों में निबंध लेखन।

# संगीत कला विद् (अंतिम वर्ष)
## गायन/स्वरवाद्य
## प्रायोगिक परीक्षा

समय : 40 मिनिट पूर्णांक : 150

1. पिछले वर्ष के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।
2. पाठ्यक्रम के राग –छायानट, पूरियाधनाश्री, जयजयवन्ती, वसंत, गौडसारंग, सोहनी, पूरिया, ललित एवं कालिंगडा।

   (अ) पाठ्यक्रम के रागों में किन्हीं चार रागों में विलम्बित ख्याल (आलाप तानों सहित) अथवा विलम्बित गत/ख्याल अथवा मसीतखानी गत (विस्तृत आलाप, स्थायी, अंतरा, तानों/तोडों सहित) का प्रदर्शन।

   (ब) पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में मध्यलय रचना ख्याल (आलाप, बोलतानों एवं तानों सहित) का प्रदर्शन अथवा मध्यलय रचना/रजाखानी गत (आलाप एवं तानों/तोडों, तिहाई सहित) का अभ्यास।

   (स) पाठ्यक्रम के किसी एक राग में ध्रुपद (दुगुन, तिगुन, चौगुन एवं छःगुन सहित) एक धमार (दुगुन एवं चौगुन सहित) एक तराने का गायन अथवा अपने वाद्य पर तीनताल से भिन्न पृथक अन्य ताल में एक रचना का आलाप एवं तानों/तोडों, तिहाई सहित प्रदर्शन।
3. किसी सुगम संगीत की रचना का स्वर लय में गायन अथवा अपने वाद्य पर प्रदर्शन।
4. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का हाथ से ताली देकर प्रदर्शन :–

   (अ) तीनताल, कहरवा, दादरा, एकताल, चौताल का ठाह और चौगुन सहित प्रदर्शन।

   (ब) झपताल, रूपक, तीव्रा, तिलवाडा, दीपचन्दी, झूमरा, आडाचौताल और धमार का ठाह व चौगुन में प्रदर्शन।

## संदर्भ ग्रंथ


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9. हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10. चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11. संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन

# संगीत कला रत्न पूर्वार्द्ध
## गायन/स्वरवाद्य
## प्रथम प्रश्न पत्र
## संगीत शास्त्र के सिद्धांत एवं इतिहास

समय–3 घण्टे पूर्णांक : 100

1. पं. शारंगदेव की चतुःसारणा का अध्ययन। बिलावल एवं भैरव थाट में मूर्च्छना के आधार से अन्य थाटों की उत्पत्ति।

2. स्वर–प्रस्तार, खण्डमेरू, नष्ट और उद्दिष्ट विधि का अध्ययन।

3. रागांग वर्गीकरण का परिचय। कल्याण, भैरव व तोडी रागांगों का विशेष अध्ययन।

4. घराने का अर्थ एवं महत्व। ख्याल के दिल्ली, ग्वालियर व पटियाला घरानों का परिचय एवं उनकी गायन शैली की विशेषताओं का अध्ययन।

5. वीणा (रूद्रवीणा) का रामपुर घराना, इमदादखानी सितार सुरबहार का घराना एवं हाफिज अली खॉ के सरोद घराने का परिचय। गायन विधा के परिप्रेक्ष्य में तानसेन और उनके वंशजों की शिष्य परम्परा की जानकारी तथा सेनिया घराने के मुख्य कलाकारों का परिचय।

6. विभिन्न प्रकार की बंदिशों एवं गतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन। काव्य और संगीत तथा छन्द एवं ताल का संबंध।

7. भारतीय संगीत के वाद्यों के वर्गीकरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन। रूद्रवीणा, सितार, सुरबहार, सारंगी, शहनाई वाद्यों की उत्पत्ति और विकास का अध्ययन।

8. सांगीतिक योगदान :– पं. कृष्णराव पंडित, अमीर खॉ (सितार), उस्ताद अल्लारखॉ, पं. पर्वतसिंह, पं. कुदऊ सिंह, विदुषी गंगूबाई हंगल एवं पं. बलवंतराय भट्ट (भावरंग)

# संगीत कला रत्न पूर्वार्द्ध
## गायन/स्वरवाद्य
## द्वितीय प्रश्न पत्र–निबंध रचना एवं राग विवरण

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

1. न्यूनतम 600 शब्दों में संगीत विषयक निबंध।

2. दिये गये पद्यांश अथवा वाद्यगत बोल रचना को पाठ्यक्रम के उपयुक्त राग व ताल को चुनकर उसमे निबद्ध करना।

3. पाठ्यक्रम के रागों में आलाप लेखन। तान एवं तिहाई रचना के साथ।

4. निम्नलिखित रागों का विस्तृत षास्त्रीय विवरण तथा तथा पूर्व पाठ्यक्रमों से समानता रखने वाले रागों के साथ तुलनात्मक अध्ययन :–
   पूरिया कल्याण, अहीर भैरव, मारूबिहाग, बिलासखानी तोडी, जोग, श्यामकल्याण, नंद, चन्द्रकौंस, गुर्जरी तोडी, शुद्धसारंग।

5. राग खमाज, भैरवी, पहाडी अथवा शिवरंजनी में से किसी एक राग में ठुमरी या टप्पा अथवा धुन।

# संगीत कला रत्न पूर्वार्द्ध
## गायन/स्वरवाद्य
## प्रायोगिक परीक्षा (मौखिक)

समय : 1 घण्टा पूर्णांक : 300

1. निम्नलिखित रागों का विस्तृत शास्त्रीय विवरण तथा पूर्व पाठ्यक्रमों से समानता रखने वाले रागों के साथ, तुलनात्मक अध्ययन।

   (अ) पूरिया कल्याण, श्याम कल्याण, मारूबिहाग, बिलासखानी तोडी, जोग, अहीर भैरव, गुर्जरी तोडी, नंद, चन्द्रकौंस एवं शुद्धसारंग। उपरोक्त रागों में से 5 रागों में बडा ख्याल या विलम्बित रचना एवं सभी रागों में मध्यलय की रचना का विस्तृत गायकी या तंत्रकारी सहित प्रदर्शन।

   (ब) राग खमाज, भैरवी, पहाडी अथवा शिवरंजनी में से किसी एक राग में ठुमरी, टप्पा या दादरा का गायन, वाद्य के परीक्षार्थियों द्वारा इन रागों में से किसी एक राग में त्रिताल के अतिरिक्त रचना अथवा धुन का प्रदर्शन।

2. पाठ्यक्रम के रागों में नोम–तोम के आलाप एवं उपज सहित एक ध्रुपद (दुगुन, तिगुन, चौगुन एवं छःगुन सहित), एक धमार (दुगुन, तिगुन, एवं चौगुन सहित), एक तराना अथवा चतुरंग गायकी सहित एवं वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये त्रिताल से भिन्न किन्हीं दो तालों में रचना (आलाप, तान/तोडा सहित) बजाने का अभ्यास एवं प्रदर्शन।

## प्रायोगिक परीक्षा (मंच प्रदर्शन)

समय : 45 मिनिट पूर्णांक : 150

1. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से किसी एक राग का प्रदर्षन।
2. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से परीक्षक द्वारा दिये गये पांच रागों में से किसी एक राग की प्रस्तुति।
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से किसी एक राग में ठुमरी, टप्पा, तराना, त्रिवट, चतुरंग अथवा धुन का प्रदर्शन।

## संदर्भ ग्रंथ


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9. हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10. चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11. संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12. भारतीय संगीत का इतिहास – श्री उमेश जोशी
13. निबंध संगीत – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
14. निबंध संगीत – श्री आर. एन. अग्निहोत्री
15. तन्त्री वादन की वादन कला – डॉ. प्रकाश महाडिक

# संगीत कला रत्न अंतिम वर्ष
## गायन/स्वरवाद्य
## शास्त्र–प्रथम प्रश्न–पत्र
## संगीत शास्त्र के सिद्धांत एवं इतिहास

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

1. श्रुति और स्वर का संबंध। प्रमाण श्रुति का अध्ययन। स्वर संवाद, स्वर अंतराल का अध्ययन।

2. जाति की परिभाषा व सामान्य अध्ययन। प्राचीन दशाविध राग वर्गीकरण (ग्राम राग आदि), राग रागिनी पद्धति का परिचय। थाट राग वर्गीकरण का आलोचनात्मक विवेचन। सारंग, मल्हार तथा कान्हडा रागांगों का विशेष अध्ययन।

3. वर्तमान संदर्भ में घरानों का औचित्य। ख्याल के आगरा, किराना तथा जयपुर घरानों का परिचय एवं उनकी गायन शैलियों का अध्ययन।

4. बाबा उस्ताद अलाउद्दीन खॉ का मैहर (सितार एवं सरोद घराना), उस्ताद मुश्ताक अली खॉ का सितार घराना।

5. आधुनिक वृन्दगान एवं वृन्दवादन की जानकारी। (भारतीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में) सरोद, संतूर, विचित्रवीणा, तानपुरा, बेला, बांसुरी वाद्यों की उत्पत्ति और विकास का अध्ययन। आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों का परिचय।

6. सौंदर्य शास्त्र की दृष्टि से राग एवं रस का पारस्परिक संबंध।

7. पं. रातंजनकर, पं. भीमसेन जोशी, उस्ताद अमीर खॉ, पं. कुमार गंधर्व, उस्ताद अब्दुल हलीम जाफर खॉ, पं. हरिप्रसाद चौरसिया, पन्नालाल घोष, पं. वी. जी. जोग, डॉ एन. राजम का जीवन परिचय तथा उनका सांगीतिक योगदान।

## संगीत कला रत्न अंतिम वर्ष
## गायन/स्वरवाद्य
## शास्त्र–द्वितीय प्रश्न–पत्र
## निबंध रचना एवं राग विवरण

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

1. न्यूनतम 600 शब्दों में संगीत विषयक निबंध।
2. दिये गये पद्यांश अथवा वाद्यगत बोल रचना को पाठ्यक्रम से उपयुक्त राग व ताल को चुनकर उसमें निबद्ध करना।
3. पाठ्यक्रम के रागों में आलाप एवं तान लेखन।
4. अंकों के माध्यम से विभिन्न लयकारियों को ताललिपि में लिखने का ज्ञान। प्रचलित तालों को डेढगुन (3/2), पौन गुन (3/4), सवागुन (5/4) इन लयकारियों में लिखने का अभ्यास।
5. निम्नलिखित रागों का विस्तृत शास्त्रीय विवरण तथा पूर्व पाठ्यक्रमों में समानता रखने वाले रागों के साथ तुलनात्मक अध्ययन।

   दरबारी कान्हडा, आभोगी कान्हडा, नायकी कान्हडा, मियॉ की मल्हार, मध्यमादी सारंग, रागेश्री, जोगकौंस, मधुवंती, देवगिरी बिलावल, एवं भटियार।

   **टीप :– कुल 10 राग हैं।**

## संगीत कला रत्न अंतिम
## गायन/स्वरवाद्य
## प्रायोगिक परीक्षा (मौखिक)

समय : 1 घण्टा पूर्णांक : 300

1. निम्नलिखित रागों में से किन्हीं 5 रागों में एक बडा ख्याल या विलम्बित रचना तथा सभी रागों में छोटा ख्याल या मध्य लय की रचना (विस्तृत गायकी या तंत्रकारी सहित प्रदर्शन)।

   (अ) दरबारी कान्हडा, आभोगी कान्हडा, नायकी कान्हडा, मियॉ की मल्हार, मध्यमादी सारंग, रागेश्री, जोगकौंस, मधुवंती, देवगिरी बिलावल, एवं भटियार।

   (ब) राग देस, तिलंग, भैरवी एवं पीलू में से किसी एक राग में ठुमरी या टप्पा (गायन के विद्यार्थियों के लिये) तथा इन्हीं रागों में से किसी एक राग में धुन का प्रदर्षन (वाद्य के विद्यार्थियों के लिये)

2 पाठ्यक्रम के रागों में नोम–तोम के आलाप उपज सहित एक ध्रुपद (दुगुन, तिगुन, चौगुन एवं छःगुन सहित), एक धमार (दुगुन, तिगुन, एवं चौगुन सहित), एक तराना गायकी सहित एवं चतुरंग अथवा अपने वाद्य पर त्रिताल के अतिरिक्त अन्य दो तालों में रचनाओं का आलाप तान सहित वादन।

## संगीत कला रत्न अंतिम
## गायन/स्वरवाद्य
## प्रायोगिक परीक्षा (मंच प्रदर्शन)

समय : 45 मिनिट पूर्णांक : 150

1. निर्धारित पाठ्यक्रम में से परीक्षार्थी द्वारा किसी एक राग का अपनी इच्छानुसार बडा ख्याल अथवा विलम्बित अथवा मसीतखानी गत की रचना का प्रदर्शन। (विस्तृत गायकी/तंत्रकारी सहित)

2. परीक्षक द्वारा दिये गये पॉच रागों में से किसी एक राग की प्रस्तुति।

3. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से किसी एक राग में ठुमरी, दादरा अथवा धुन का प्रदर्शन।

## संदर्भ ग्रंथ


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9. हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10. चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11. संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12. भारतीय संगीत का इतिहास – श्री उमेश जोशी
13. निबंध संगीत – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
14. निबंध संगीत – श्री आर. एन. अग्निहोत्री
15. तन्त्री वादन की वादन कला – डॉ. प्रकाश महाडिक

# एक वर्षीय सर्टिफिकेट
## गायन/स्वरवाद्य
## सैद्धांतिक–प्रथम प्रश्नपत्र

समय : 3 घण्टे पूर्णांकः 50

1. संगीत, नाद, श्रुति, स्वर, शुद्ध, विकृत, चल, अचल, सप्तक, मंद्र, मध्य, तार, बाईस श्रुतियों में वर्तमान सप्तक की स्वर स्थापना, स्थायी, अंतरा, संचारी, आभोंग की परिभाषा।
2. ध्रुपद, धमार, ख्याल, तराना, चतुरंग, लक्षणगीत, स्वरमालिका, सरगम, भजन, मसीतखानी रजाखानी का विस्तृत परिचय।
3. गायन के परीक्षार्थियों के लिये तानपुरा अथवा हारमोनियम एवं वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये अपने वाद्य का सामान्य परिचय तथा उनके विभिन्न अवयवों का सचित्र ज्ञान।
4. गायक अथवा वादक के गुण–दोषों का अध्ययन।
5. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों का विस्तृत शास्त्रीय परिचय। यमन, भैरव, खमाज, काफी एवं भूपाली।
6. पाठ्यक्रम के निर्धारित तालों की ठाह, दुगुन लिखने का अभ्यास– त्रिताल, एकताल, चौताल, झपताल, दादरा एवं कहरवा।
7. पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर अथवा पं. विष्णु नारायण भातखण्डे का जीवन परिचय एवं संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान।

## प्रायोगिक

पूर्णांकः 100

1. पाठ्यक्रम के निर्धारित राग :– यमन, भैरव, खमाज, काफी एवं भूपाली।
2. कल्याण व भैरव थाटों में दस–दस अलंकारों का गायन/वादन।
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित सभी रागों में 2 बडे ख्याल अथवा विलम्बित रचना का आलाप, तानों सहित प्रदर्शन।
4. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में स्वरमालिका (सरगम), लक्षणगीत, छोटा ख्याल अथवा द्रुत रचना का आलाप, तानों सहित प्रदर्शन।
5. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से एक ध्रुपद (दुगुन सहित), एक तराना अथवा भजन की प्रस्तुति। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये द्रुत रचना का प्रदर्षन।
6. त्रिताल, एकताल, चौताल, झपताल, दादरा, कहरवा तालों का हाथ से ताली देकर प्रदर्शन व दुगुन का अभ्यास।

## संदर्भ ग्रंथ


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 1 से 3 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 1 से 2 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. संगीत शास्त्र – श्री एम. बी. मराठे
7. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा

# संगीतिका जूनियर डिप्लोमा
# सुगम संगीत
# सैद्धांतिक

समय : 3 घण्टा पूर्णांक : 75

1. भारत में प्रचलित प्रमुख संगीत पद्धतियों की संक्षिप्त जानकारी।
2. सुगम संगीत में प्रयोंग किये जाने वाले निम्नलिखित वाद्यों की बनावट (सचित्र) एवं वर्णनः– बांसुरी, तबला, ढोलक, डफ, मंजीरा, बैन्जो (बुलबुल तरंग), तानपुरा।
3. परिभाषा एवं वर्णन :–
   संगीत, नाद, स्वर, सप्तक, अलंकार, (पल्टे), आरोह, अवरोह, पकड, थाट, राग, आश्रयराग, आलाप, तान।
4. गीत, भजन, गजल एवं लोकगीत की संक्षिप्त जानकारी, विशेषताएँ एवं तुलनात्मक अध्ययन।
5. ख्याल, ठुमरी, तराना, कव्वाली, भावगीत, अभंग, रविन्द्र संगीत, नजरूल गीत आदि की संक्षिप्त जानकारी।
6. पं. भातखण्डे निर्मित स्वरलिपि–ताललिपि पद्धति की जानकारी।
7. निम्नलिखित तालों का ताललिपि में लेखन :–
   दादरा, रूपक, कहरवा, एकताल, त्रिताल।
8. सीखे हुए गीत, भजन एवं गजलों की रचनाएँ लिखकर उनका भावार्थ स्पष्ट करना।
9. "वृन्दवादन" (कोरस) एवं "वाद्यवृन्द" की संक्षिप्त जानकारी।
10. सुगम संगीत विषयक निबंध का लगभग 300 शब्दों में लेखन।
11. निम्नलिखित रचनाकारों का संक्षिप्त जीवन परिचय :–
    हरिवंशराय बच्चन, गोपालदास, नीरज, मीराबाई, सूरदास, मिर्जागालिब, बहादुरशाह जफर।

# संगीतिका जूनियर डिप्लोमा
# सुगम संगीत

## प्रायोगिक

समय : 20 मिनिट पूर्णांक : 125

1. आकाशवाणी द्वारा अनुमोदित रचनाकारों की रचनाओं का गायन :–
   (चार–चार) गीत, भजन, गजलें कुल 12 रचनाएँ – (प्रत्येक रचना पृथक रचनाकार की होना अनिवार्य है।) (प्रत्येक रचना की संगीत रचना मौलिक हो।)
2. राग यमन, बिलावल, खमाज, काफी एवं भैरव रागों के आरोह अवरोह एवं पकड तथा इनमें से किसी एक राग में मध्यलय ख्याल (5 आलाप एवं 5 तानों सहित) का गायन।
3. भारत में प्रचलित किन्हीं दो प्रदेशों के लोकगीतों का गायन। (कुल दो लोकगीत, दोनों पृथक प्रदेशों के होना अनिवार्य है।)
4. राष्ट्रगान (जनगणमन) तथा राष्ट्रगीत (वन्देमातरम) (आकाशवाणी अनुमोदित राग देस पर आधारित रचना) कर सस्वर, लय–तालबद्ध गायन।
5. हारमोनियम बजाते हुए दस अलंकारों का गायन।
6. निम्नलिखित तालों की हाथ से ताली देकर ठाह, दुगुन में पढन्त :–
   दादरा, रूपक, कहरवा, रूपक एवं त्रिताल।

## प्रायोगिक अंक विभाजन

| | |
|---|---|
| गीत | 20 अंक |
| भजन | 20 अंक |
| गजल | 20 अंक |
| लोकगीत | 20 अंक |
| मध्यलय | 15 अंक |
| राष्ट्रगान एवं राष्ट्रगीत | 10 अंक |
| हारमोनियम बजाकर गायन | 10 अंक |
| हाथ पर ताल प्रदर्षन | 10 अंक |
| | ..... |
| | 125 अंक |
| | ..... |

# संगीतिका–सीनियर डिप्लोमा
# सुगम संगीत
# सैद्धांतिक

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

1. जूनियर डिप्लोमा के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।

2. सुगम संगीत में प्रयोग किये जाने वाले निम्नलिखित वाद्यों की बनावट (सचित्र) एवं वर्णन :–

   हारमोनियम, सितार, वायलिन, सारंगी, स्पेनिष गिटार, नाल, इलेक्ट्रॉनिक वाद्य (की–बोर्ड, ऑक्टोपेड, इलेक्ट्रॉनिक तानपुरा)

3. वाद्य वर्गीकरण की जानकारी (सुषिर, तंतु, ताल वाद्य आदि)

4. परिभाषाएँ एवं वर्णन :–

   मीड, कण, खटका, मुरकी, गमक, वर्ण, लय , ताल, मात्रा, सम, खाली, भरी, ठेका, आवर्तन।

5. निम्नलिखित सांगीतिक विधाओं की संक्षिप्त जानकारी :–

   शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, लोक संगीत एवं चित्रपट संगीत।

6. निम्नलिखित तालों का ताललिपि में लेखन ठाह, दुगुन, चौगुन सहित :–

   झपताल, दीपचन्दी, धुमाली, खेमटा, चांचर, भजनी ठेका।

7. संगीत विषयक निबंध का लगभग 400 शब्दों में लेखन।

8. निम्नलिखित रचनाकारों का संक्षिप्त परिचय :–

   कबीरदास, तुलसीदास, गुरूनानक, महादेवी वर्मा, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, जयशंकर प्रसाद, मीर–तकी–मीर, फैज अहमद फैज, जिगर मुरादाबादी।

# संगीतिका–सीनियर डिप्लोमा
# सुगम संगीत
# प्रायोगिक

समय : 20 मिनिट पूर्णांक : 125

1. आकाशवाणी द्वारा अनुमोदित रचनाकारों की रचनाओं का गायन :–

   (दो–दो गीत, भजन, गजलें कुल छः, सभी पृथक रचनाकारों की तथा मौलिक संगीत रचनाएँ।)

2. निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाओं का गायन :–

   (दो–दो गीत, भजन, गजलें कुल छः सभी पृथक रचनाकारों की तथा मौलिक संगीत रचनाएँ।)

   तुलसीदास, सूरदास, कबीरदास, गुरूनानक, मीराबाई, सुमित्रानन्द पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, गोपालदास, नीरज, जयषंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, मिर्जा गालिब, बहादुरशाह जफर, फैज अहमद फैज, शकील बदायुनी, जिगर मुरादाबादी, मीरतकी मीर।

3. उपरोक्त रचनाओं में से किसी एक रचना में उपज, बढत आदि सहित गायन।
4. एक स्वागत गीत एवं देशभक्ति गीत का गायन

   **(संगीत रचना मौलिक होना अनिवार्य है।)**

5. राग पूर्वी, मारवा, आसावरी, तोडी एवं भैरवी के आरोह, अवरोह, पकड तथा इनमें से किसी एक राग के मध्यलय ख्याल का गायन, पॉच आलाप एवं पॉच तानों सहित।
6. भारत में प्रचलित किन्हीं दो लोकगीतों का गायन। **(दोनों पृथक प्रदेशों के हों)**
7. निम्नलिखित तालों का हाथ से ताली देकर ठाह, दुगुन एवं चौगुन सहित प्रदर्षन :–

   दादरा, रूपक, कहरवा, झपताल, एकताल, दीपचन्दी, त्रिताल।

## प्रायोगिक अंक विभाजन

| | |
|---|---|
| गीत | 20 अंक |
| भजन | 20 अंक |
| गजल | 20 अंक |
| लोकगीत | 20 अंक |
| उपज, बढत सहित रचना | 15 अंक |
| मध्यलय ख्याल | 15 अंक |
| ताल प्रदर्शन | 10 अंक |
| देशभक्ति गीत अथवा स्वागत गीत | 05 अंक |
| | ..... |
| | 125 अंक |
| | ..... |

# बी.म्यूज. गायन/स्वरवाद्य
# प्रथम सेमेस्टर
# शास्त्र प्रश्न–पत्र

समय : 3 घण्टे

शास्त्र प्रश्न पत्र : 35
सी. सी ई.: 15
पूर्णांक : 50

इकाई–1

1. परिभाषाएँ :– संगीत, नाद, श्रुति, स्वर (शुद्ध, विकृत), सप्तक, थाट एवं राग।
2. दस थाटों के नाम व स्वर, राग एवं थाट का तुलनात्मक अध्ययन।

इकाई –2

1. आश्रय राग, वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, वर्जित स्वर, आरोह, अवरोह व जाति का सामान्य अध्ययन।
2. राग की जाति का सामान्य अध्ययन।

इकाई–3

1. नाद की परिभाषा, प्रकार व विशेषताएँ।
2. गायन के परीक्षार्थियों के लिये तानपुरा तथा वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये अपने–अपने वाद्य का सामान्य परिचय तथा उनके विभिन्न अवयवों का सचित्र ज्ञान।

इकाई–4

1. ध्रुपद, धमार, ख्याल, तराना, लक्षणगीत, स्वरमालिका (सरगम), मसीतखानीगत व रजाखानी गत का परिचय।
2. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों का वर्णन। (यमन, भैरव, खमाज, दुर्गा (बिलावल थाट) एवं वृन्दावनी सारंग)

इकाई–5

1. पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे का जीवन परिचय एवं संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान।
2. पाठ्यक्रम के निर्धारित तालों को ठाह लय में लिखने का अभ्यास। (त्रिताल, एकताल, दादरा एवं कहरवा)

## प्रायोगिक

बाह्य मूल्यांकन : 80
आंतरिक मूल्यांकन : 20
पूर्णांक : 100

1. बिलावल एवं भैरव थाटों में दस–दस अलंकारों का अभ्यास।
2. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों –यमन, भैरव, खमाज, दुर्गा (बिलावल थाट), वृन्दावनी सारंग में सरगम, लक्षणगीत, छोटा ख्याल एवं दो बडे ख्याल। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये मसीतखानी गत (किन्हीं दो रागों में) एवं रजाखानी गत सभी रागों में (आलाप, तान सहित)।
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में एक ध्रुपद या एक धमार एवं एक तराना। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये किसी धुन को अपने वाद्य पर प्रस्तुत करना।
4. आकाशवाणी द्वारा मान्य वन्दे मातरम् का स्वरलय में गायन अथवा वादन।
5. त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा तालों का हाथ से ताली देकर प्रदर्शन तथा दुगुन का अभ्यास।

## :संदर्भ ग्रंथः


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन

## बी.म्यूज. गायन/स्वरवाद्य
## द्वितीय सेमेस्टर
## शास्त्र प्रश्न–पत्र

शास्त्र प्रश्न पत्र : 35
समय : 3 घण्टे सी. सी ई.: 15
पूर्णांक : 50

इकाई–1

1. मींड, कण, खटका, मुर्की, आलाप, तान, बोल (मिजराब/जवा के बोल) (प्रहार) आकर्ष (अपकर्ष), सूत, जमजमा और तोडा का पारिभाषिक परिचय।
2. लय (विलंबित, मध्य, द्रुत), ठाह, दुगुन, मात्रा, ताल, विभाग, सम, ताली, खाली, ठेका व आवर्तन की जानकारी।

इकाई–2

1. गायक/वादक के गुण–दोष।
2. शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत एवं लोकगीत का ज्ञान तथा गीत, गजल, होरी का परिचय एवं महत्व।

इकाई–3

1. राजा मानसिंह तोमर, स्वामी हरिदास का जीवन परिचय तथा संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान।
2. भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति का अध्ययन।

इकाई–4

1. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों का शास्त्रीय परिचय– बिलावल या अल्हैया बिलावल, भूपाली, भीमपलासी, बिहाग, काफी।
2 निम्न अ एवं ब को पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर पद्धति में लिखने का अभ्यास :–

(अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिये –
   1 पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका या लक्षणगीत।
   2. पाठ्यक्रम के रागों में एक एक मध्य लय ख्याल।

(ब) स्वरवाद्य के परीक्षार्थियों के लिये –
   1. पाठ्यक्रम के रागों में एक–एक विलंबित गत या मसीतखानी गत।
   2. पाठ्यक्रम के रागों में से एक मध्य लय गत अथवा रजाखानी।

इकाई–5

1. पाठ्यक्रम के निर्धारित तालों को ठाह, लय एवं दुगुन में लिखने का अभ्यास झपताल, चौताल, धमार तथा त्रिताल।
2. लगभग 300 शब्दों में संगीत संबंधी विषय पर निबंध लेखन।

## बी.म्यूज. गायन/स्वरवाद्य
## सेमेस्टर द्वितीय (प्रायोगिक)

बाह्य मूल्यांकन : 80
आंतरिक मूल्यांकन : 20
पूर्णांक : 100

1. बिलावल एवं खमाज थाटों में 10–10 अलंकारों का अभ्यास।
2. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में सरगम, लक्षण गीत, छोटाख्याल एवं दो बड़े ख्याल। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये मसीतखानी गत (कोई दो) एवं सभी रागों में रजाखानी गत (आलाप, तान सहित)। बिलावल या अल्हैया बिलावल, भूपाली, भीमपलासी, बिहाग, काफी
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित में एक ध्रुपद, एक धमार, तथा एक तराना। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये किसी एक राग में त्रिताल से भिन्न अन्य ताल में कोई रचना या धुन का अपने वाद्य पर प्रदर्शन।
4. झपताल, चौताल, धमार तथा त्रिताल का हाथ से ताली देकर प्रदर्शन तथा दुगुन या चौगुन का प्रदर्शन।
5. आकाशवाणी द्वारा मान्य वन्दे मातरम/भजन/देशभक्ति गीत का स्वरलय में गायन अथवा वादन।

## :संदर्भ ग्रंथः


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4 संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन

# बी.म्यूज. गायन/स्वरवाद्य
# तृतीय सेमेस्टर
# शास्त्र प्रश्न–पत्र

समय : 3 घण्टे

शास्त्र प्रश्न पत्र : 35
सी. सी ई .: 15
पूर्णांक : 50

इकाई–1

1. बाईस श्रुतियों में वर्तमान सप्तक की स्वर स्थापना (पं. भातखण्डे जी के अनुसार)।
2. गीत के अवयव – स्थायी, अंतरा, संचारी, आभोग।

इकाई–2

1 पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों का शास्त्रीय विवेचन।
2 पाठ्यक्रम के रागों को भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लिखने का अभ्यास।

इकाई–3

1 पूर्वांग, उत्तरांग, वर्ण, अलंकार (पल्टा), स्थायी, अंतरा, संचारी, आभोग की परिभाषा।
2 अल्पत्व, बहुत्व, निबद्ध, अनिबद्ध की परिभाषा।

इकाई–4

1 संगीत की उत्पत्ति के विभिन्न मत।
2 संगीतोपयोगी ध्वनि की विशेषताऍं।

इकाई–5

1 पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर एवं अमीर खुसरो का संगीत में योगदान।
2 स्वामी हरिदास एवं तानसेन का जीवन परिचय।

## प्रायोगिक

बाह्य मूल्यांकन : 80
आंतरिक मूल्यांकन : 20
पूर्णांक : 100

1 कल्याण तथा काफी थाटों में 10–10 अलंकारों का अभ्यास।

2 पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों (मालकौंस, देशकार, आसावरी, केदार एवं हमीर) में सरगम, लक्षणगीत, छोटा ख्याल तथा 2 बडे ख्याल ।

वाद्य के विद्यार्थियों के लिये मसीतखानी गत (कोई दो) एवं रजाखानी गत सभी रागों में (तान आलाप सहित)।

3 पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में एक ध्रुपद तराना एवं भजन ।

वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये त्रिताल के अलावा अन्य ताल में गत।

4 झपताल, तीनताल, चौताल, आडाचौताल तथा रूपक में दुगुन,चौगुन।

## :संदर्भ ग्रंथः


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4 संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन

# बी.म्यूज. गायन/स्वरवाद्य
## चतुर्थ सेमेस्टर
## प्रथम प्रश्न–पत्र

समय : 3 घण्टे

शास्त्र प्रश्न पत्र : 35
सी. सी ई. : 15
पूर्णांक : 50

इकाई–1

1 पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों की रचनाओं को पं. विष्णुनारायण भातखण्डे स्वरलिपि एवं ताल लिपि पद्धति का अभ्यास।
2 संधिप्रकाश, परमेल प्रवेशक रागों की संक्षिप्त जानकारी।

इकाई–2

1 हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटकी स्वर सप्तकों का अध्ययन।
2 शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, लोक संगीत का ज्ञान तथा गीत, गजल, भजन का परिचय एवं महत्व।

इकाई–3

1 पूर्वराग, उत्तरराग, वादी, संवादी का राग गायन में महत्व।
2 गमक की परिभाषा एवं उसके प्रकार।

इकाई–4

1 हस्सू खॉ, हद्दू खॉ, सदारंग, अदारंग का जीवन परिचय।
2 उ. बाबा अलाउद्दीन खॉ का संगीत के क्षेत्र में योगदान।

इकाई–5

1 पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों का शास्त्रीय विवेचन।
2 ताल धमार एवं दीपचन्दी को ठाह, दुगुन सहित ताललिपि में लेखन।

## प्रायोगिक

बाह्य मूल्यांकन : 80
आंतरिक मूल्यांकन : 20
पूर्णांक : 100

1 आसावरी तथा भैरव थाट में 10–10 अलंकारों का अभ्यास।
2 बागेश्री, देस, कामोद, जौनपुरी एवं रामकली रागों में सरगम, लक्षण गीत, छोटा ख्याल तथा 2 बडे ख्याल आलाप तान सहित। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये मसीतखानी गत (कोई दो) एवं सभी रागों में रजाखानी गत (तान, आलाप सहित)।
3 पाठ्यक्रम के रागों में एक ध्रुपद, एक धमार एक तराना तथा वाद्य के विद्यार्थियों के लिये धुन।
4 एकताल, त्रिताल, झपताल, कहरवा तथा धमार की दुगुन एवं चौगुन ।

## :संदर्भ ग्रंथः


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4 संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन

# बी.म्यूज. गायन/स्वरवाद्य
## पंचम सेमेस्टर
## प्रथम प्रश्न–पत्र

समय : 3 घण्टे

शास्त्र प्रश्न पत्र : 35
सी. सी ई.: 15
पूर्णांक : 50

इकाई–1

1 बाईस श्रुतियों के नाम एवं उनके शुद्ध विकृत बारह स्वरों की स्थापना।
2 राग के समय सिद्धांत की जानकारी।

इकाई–2

1 पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों का शास्त्रीय विवेचन।
2 पाठ्यक्रम के रागों की विलम्बित एवं मध्यलय की रचनाओं को स्वरलिपि में लिखना।

इकाई–3

1 वाद्य वर्गीकरण की सामान्य जानकारी।
2 शुद्ध, छायालग एवं संकीर्ण रागों का सामान्य परिचय।

इकाई–4

1 गांधर्व गान, मार्गी देशी का सामान्य परिचय।
2 घरानों की परिभाषा एवं स्पष्टीकरण।

इकाई–5

1 ग्वालियर एवं आगरा घराने का सामान्य परिचय।
2 पं. कृष्णराव शंकर पंडित एवं पं. राजाभैया पूछवाले का जीवन परिचय।

## प्रायोगिक

बाह्य मूल्यांकन : 80
आंतरिक मूल्यांकन : 20
पूर्णांक : 100

1 पूर्वी तथा मारवा थाट में 10–10 अलंकारों का अभ्यास।

2 दरबारी कान्हडा, पूरिया, मियॉ मल्हार, अडाणा एवं मुल्तानी रागों में सरगम, लक्षण गीत, छोटा ख्याल तथा दो बडे ख्याल आलाप तान सहित। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये मसीतखानी गत (कोई दो) एवं रजाखानी गत सभी रागों में (आलाप, तान सहित)।

3 पाठ्यक्रम के रागों में एक ध्रुपद एक धमार एक तराना। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये धुन।

4 धमार, तिलवाडा, चौताल, तीव्रा, सूलताल का ज्ञान एवं दुगुन चौगुन हाथ पर ताली देकर प्रदर्शन।

## :संदर्भ ग्रंथः


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4 संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन

# बी.म्यूज. गायन / स्वरवाद्य
## सेमेस्टर षष्टम
## शास्त्र प्रश्न–पत्र

समय : 3 घण्टे

शास्त्र प्रश्न पत्र : 35
सी. सी ई.: 15
पूर्णांक : 50

इकाई–1

1. टोन, मेजरटोन, माईनर टोन, सेमीटोन का सामान्य ज्ञान।
2. स्केल, नेचरल स्केल, डायटोनिक स्केल का सामान्य परिचय।

इकाई–2

1. हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक सप्तकों का तुलनात्मक अध्ययन।
2. राग के ग्रह आदि (दस लक्षण) लक्षणों का विस्तृत अध्ययन।

इकाई–3

1. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों का शास्त्रीय विवेचन।
2. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों को विलम्बित एवं मध्यलय की रचनाओ का स्वर एवं ताललिपि में लेखन।

इकाई–4

1. ठुमरी, चैती, कजरी तथा कब्बाली का परिचय।
2. ताललिपि में धमार, चौताल, झूमरा, आडाचौताल तथा सूलताल का लेखन।

इकाई–5

1. तत (तंत्री) अवनद्ध, घन, एवं सुषिर वाद्य वर्गीकरण का अध्ययन।
2. पं. ओंकारनाथ ठाकुर, पं. वी.जी. जोग, उ. हाफिज अली खॉ का जीवन परिचय।

## प्रायोगिक

बाह्य मूल्यांकन : 80
आंतरिक मूल्यांकन : 20
पूर्णांक : 100

1 तोडी एवं भैरवी थाटों में 10–10 अलंकारों का अभ्यास।

2 छायानट, पूरियाधनाश्री, तोडी, वसंत एवं सोहनी रागों में सरगम, लक्षणगीत, छोटाख्याल तथा दो बडे ख्याल आलाप तान सहित। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये मसीतखानी गत (कोई दो) एवं सभी रागों में रजाखानी गत (आलाप, तान सहित)।

3 पाठयक्रम के रागों में ध्रुपद, धमार, तथा तराना (1–1)। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये धुन।

4 त्रिताल, चौताल, एकताल, कहरवा तथा झपताल का दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लय में हाथ से ताली देकर प्रदर्शन।

## :संदर्भ ग्रंथः


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4 संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन

# बी.म्यूज. गायन/स्वर वाद्य
## सेमेस्टर सप्तम
## शास्त्र–प्रथम प्रश्न–पत्र

समय : 3 घण्टे

शास्त्र प्रश्न पत्र : 85
सी. सी ई.: 15
पूर्णांक :100

इकाई–1

1 अहोबल द्वारा वीणा के तार पर शुद्ध विकृत स्वरों की स्थापना।

2 ग्राम राग देसी राग एवं राग रागिनी वर्गीकरण का परिचय।

इकाई–2

1 पं. व्यंकटमुखी के 72 मेल की जानकारी।

2 उत्तर भारतीय संगीत में एक सप्तक में 32 थाटों की निर्माण विधि।

इकाई–3

1 स्वर वाद्य के मुख्य घरानों का अध्ययन।

2 ख्याल गायन के ग्वालियर, आगरा, पटियाला, जयपुर और किराना घरानों की विशेषताओं का सामान्य परिचय।

इकाई–4

1 पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों का शास्त्रीय विवेचन।

2 पाठ्यक्रम में निर्धारित रागों की विलम्बित एवं मध्य लय की रचनाओं का ताल एवं स्वरलिपि में लेखन।

इकाई–5

1 स्टाफ नोटेशन पद्धति की सामान्य जानकारी।

2 जीवनियॉ एवं सांगितिक योगदान :– उ. अब्दुल करीम खॉ, उ. बडे गुलाम अली खॉ, पं. गजाननराव जोशी, पं. पन्नालाल घोष।

# बी.म्यूज. गायन/स्वर वाद्य
## सेमेस्टर सप्तम
## शास्त्र–द्वितीय प्रश्न–पत्र

समय : 3 घण्टे

शास्त्र प्रश्न पत्र : 85
सी. सी ई.: 15
पूर्णांक :100

इकाई – 1

1 राग निर्माण और स्वर–रचना के सिद्धान्त।

2 सरल एवं शास्त्रीय संगीत की तुलना एवं रवीन्द्र संगीत पर शास्त्रीय संगीत का प्रभाव।

इकाई – 2

1 शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत का सम्बन्ध।

2 नायक–गायक आदि के भेद।

इकाई – 3

1 संगीत के परिभाषक शब्द एवं उनका उपयोग।

2 आवाज–धर्म के अनुसार विद्यार्थियों के वर्ग।

इकाई – 4

1 तानपुरा एवं सहायक नाद।

2 संगीत में श्रुति की प्रयोगात्मकता।

इकाई – 5

1 राग ध्यान और राग चित्र।

2 ध्रुवा गान का परिचय एवं उपयोगिता

## प्रायोगिक–वायवा

पूर्णांक : 150

1 पाठ्यक्रम के रागों में अलंकारो का अभ्यास।

2 शुद्धकल्याण, जयजयवन्ती, तोडी, शंकरा, सिंधूरा तथा मुलतानी रागों में से तीन रागों में विलम्बित ख्याल, एवं सभी रागों में द्रुत ख्याल (आलाप तानों सहित)। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये रजाखानी गत किन्हीं 4 रागों मे एवं सभी रागों में मसीतखानी गत (आलाप तानों सहित)।

3 पाठ्यक्रम के रागों में ध्रुपद तथा एक धमार दुगुन, तिगुन तथा चौगुन सहित तथा दो तराने। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये त्रिताल के अतिरिक्त अन्य ताल में गत का प्रदर्शन।

4 एकताल, दीपचंदी, आडाचौताल, झूमरा और सूलताल में ठाह, दुगुन चौगुन का हाथ से ताली देकर प्रदर्शन।

## प्रायोगिक–मंच प्रदर्शन

पूर्णांकः 100

1. पाठ्यक्रम में निर्धारित रागों का विस्तृत गायकी एवं तंत्रकारी के साथ प्रदर्शन करना।
2. परीक्षक द्वारा पूछे गये पाठ्यक्रम के रागों की प्रस्तुति।
3. ठुमरी–दादरा को गायकी के साथ प्रदर्शन। वाद्य के विद्यार्थी धुन की प्रस्तुति देंगे।

   राग– खमाज, काफी, भैरवी।

# प्रोजेक्ट वर्क

पूर्णांकः 50

### :संदर्भ ग्रंथः


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. संगीत शास्त्र दर्पण – श्री शांति गोवर्धन
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. सितार मलिका –
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. संगीत वाद्य – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12.राग शास्त्र – डॉ. गीता बैनर्जी
13.संगीत मणि – डॉ. महारानी शर्मा
14.प्रणव भारती भाग 1 से 7 – पं. ओमकारनाथ ठाकुर
15.संगीतांजली भाग 1 से 7 – पं. ओमकारनाथ ठाकुर

# बी.म्यूज. गायन/स्वर वाद्य
## सेमेस्टर अष्टम
## शास्त्र प्रथम प्रश्न–पत्र

समय : 3 घण्टे

शास्त्र प्रश्न पत्र : 85
सी. सी ई. : 15
पूर्णांक : 100

इकाई–1

1 रागांग वर्गीकरण का परिचय।

2 कल्याण एवं भैरव रागांग की जानकारी।

इकाई–2

1 संगीत रत्नाकर के आधार पर वर्ण, अलंकार एव गमक के लक्षणों एवं प्रकारों का अध्ययन।

2 गायन एवं वाद्य के विद्यार्थियों के लिये तानपुरा तथा अपने वाद्य का ऐतिहासिक अध्ययन।

इकाई–3

1 अविर्भाव, तिरोभाव, अनुलोम विलोम, घसीट, जमजमा कृंतन एवं तोडा की परिभाषा।

2 आलाप, बोल आलाप एवं स्वर वाद्य के संदर्भ में आलाप, जोड, झाला की विस्तृत जानकारी।

इकाई–4

1 संगीत विषय पर 400 शब्दों का निबंध।

2 गत वर्ष के पाठ्यक्रम के तालों के अतिरिक्त पंचम सवारी को आड एवं कुआड लय में लिखने का अभ्यास।

इकाई–5

1. पाठ्यक्रम में निर्धारित रागों का उनके सम प्राकृतिक रागों के साथ तुलनात्मक विवेचन।

2. पाठ्यक्रम में निर्धारित रागों की ध्रुपद, धमार तथा विलम्बित एवं मध्य लय की रचनाओं को लिखने का अभ्यास।

# बी.म्यूज. गायन/स्वर वाद्य
## सेमेस्टर अष्टम
## शास्त्र द्वितीय प्रश्न–पत्र

समय : 3 घण्टे

शास्त्र प्रश्न पत्र : 85
सी. सी ई. : 15
पूर्णांक :100

इकाई – 1

1 कला का उद्भव, विकास एवं व्यवहार।

2 संगीत में काकू का महत्व एवं प्रयोग।

इकाई – 2

1 प्राचीनकाल की आलाप गान पद्धति।

2 आधुनिक काल में आलाप गान पद्धति।

इकाई – 3

1 मानव के गायन वादन का सीमांकन तथा मुकाम, मुर्च्छना, मेल और राग का सम्बन्ध।

2 राग का उद्भव विकास एवं व्यवहार तथा बैतालिक एवं मंगल गीत।

इकाई – 4

1 स्वरों के कुल, देवता, वर्ण तथा रस आदि।

2 स्वर लिपि पद्धति, एवं स्वरलिपि पद्धति की सार्थकता।

इकाई – 5

1 तिहाई निर्माण के मूल सिद्धान्त एवं संगति के गुण।

2 संगीत के इतिहास का महत्व और भविष्य तथा भक्ति आंदोलन में संगीत का धारा प्रवाह।

## प्रायोगिक (वायवा)

पूर्णांक : 150

1 पाठ्यक्रम के राग – पूरियाधनाश्री, गौड सारंग ललित, विभास, कलावती, हंसध्वनि एवं मारूबिहाग।

2 पाठ्यक्रम के सभी रागों में छोटे ख्याल एवं तीन बडे ख्याल विस्तृत गायकी सहित। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये चार रजाखानी एवं सभी रागों में मसीतखानी गत (आलाप, तान झाला सहित)।

3 पाठ्यक्रम के रागों में एक ध्रुपद एक धमार का दुगुन, तिगुन एवं चौगुन के साथ गायन। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये त्रिताल के अतिरिक्त अन्य ताल में रचना का प्रदर्शन।

4 दो तराने तथा भजन की प्रस्तुति।

5 प्रथम वर्ष से अंतिम वर्ष तक के तालों का हाथ से ताली देकर प्रदश

## बी.म्यूज. गायन/स्वर वाद्य
## सेमेस्टर अष्टम
## मंच प्रदर्शन

पूर्णांक : 100

1 पाठ्यक्रम के रागों का विस्तृत गायकी एवं तंत्रकारी के साथ प्रदर्शन करना। (बडा ख्याल छोटा ख्याल सहित)।

2 परीक्षक द्वारा पूछे गये पाठ्यक्रम के रागों की प्रस्तुति।

3 ठुमरी–दादरा का गायकी के साथ प्रदर्शन। वाद्य के विद्यार्थी धुन की प्रस्तुति देंगे। राग– तिलंग, शिवरंजनी, भैरवी

# प्रोजेक्ट वर्क

पूर्णांकः 50

### :संदर्भ ग्रंथः


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. संगीत शास्त्र दर्पण – श्री शांति गोवर्धन
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. सितार मलिका –
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. संगीत वाद्य – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12.राग शास्त्र – डॉ. गीता बैनर्जी
13.संगीत मणि – डॉ. महारानी शर्मा
14.प्रणव भारती – पं. ओमकारनाथ ठाकुर
15.संगीतांजली – पं. ओमकारनाथ ठाकुर
16.संगीत रत्नावली – श्री अशोक कुमार यमन
17.राग विशारद भाग–1 – डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग

# सहायक विषय
# बी. म्यूज. पंचम सेमेस्टर
# गायन/स्वरवाद्य

समय : 03 घण्टे

शास्त्र प्रश्न पत्र : 35
सी. सी ई. : 15
पूर्णांक : 50

## (लोक शास्त्र)

### इकाई – 1

1. कार्य कथन और लोक संगीत।
2. लोक संगीत की परिभाषा, परिचय, क्षेत्र एवं विशेषताएं।

### इकाई – 2

1. लोक संगीत के अंतर्गत पंडवानी विधा का सामान्य परिचय।
2. तीजन बाई एवं शारदा सिन्हा का परिचय एवं लोक संगीत में योगदान।

### इकाई – 3

1. लोक नृत्य एवं लोक गीतों का महत्व, संरक्षण की आवश्यकता।
2. लोकगीत के प्रकारों– चैती, कजरी, दादरा का उपशास्त्रयीय संगीत में स्थान एवं महत्व।

### इकाई – 4

1. लोक गीतों के स्वरूप एवं प्रकार यथा –
   (1). संस्कार संबंधी (2). ऋतु संबंधी (3). श्रम सम्बन्धी (4). उत्सव सम्बन्धी
   (5). ऐतिहासिक एवं राष्ट्रीय।
2. लोक संगीत का संक्षिप्त इतिहास।

### इकाई – 5

1. भारत के निम्नलिखित प्रमुख लोक वाद्यों का सामान्य परिचय –
   तर्पा (महाराष्ट्र), चेडा (केरल), पंगु (मणिपुर), नादस्वरम् (कर्नाटक), रवाब (जम्मू कश्मीर), डफ (हरियाणा), डुक्काई (तमिलनाडु), कांसी (पश्चिम बंगाल)।

2. लोक संगीत में वाद्यों का स्थान एवं प्रयोग।

# सहायक विषय
# बी. म्यूज. पंचम सेमेस्टर
# गायन/स्वरवाद्य
# (प्रायोगिक)

**पूर्णांक : 100**

1. अलंकार का सामान्य ज्ञान (जिस स्वर या थाट के स्वर उस गीत में लगते हैं उन्हीं थाटों या स्वरों में अलंकार कराना है।)
2. तालों का व्यवहारिक ज्ञान। दादरा कहरवा दीपचन्दी आदि। (लोक गीतों में प्रयोग होने वाले ठेके एवं तालों का ज्ञान)
3. अपने प्रदेश के अंचलों के एक–एक लोक गीतों का निम्नानुसार व्यवहारिक ज्ञान –
   (अ). संस्कार गीत, (ब). ऋतु गीत (स). श्रम गीत (द). उत्सव गीत
   (इ) मनोरंजन गीत
4. सीखी हुई किसी लोक रचना को हार्मोनियम पर बजाकर गाने का अभ्यास।

# सहायक विषय
## बी. म्यूज. षष्ट्म सेमेस्टर
## गायन / स्वरवाद्य
## लोक संगीत शास्त्र प्रश्न–पत्र

समय : 03 घण्टे शास्त्र प्रश्न पत्र : 35

सी. सी ई. : 15

पूर्णांक :50

### इकाई – 1

1. अपने प्रदेश के संबंधित अंचल के प्रतिनिधि लोक नृत्य, लोक गीत एवं लोक वाद्य का सामान्य परिचय।
2. कार्य कथन और लोक संगीत, लोक संगीत की परिभाषा, परिचय, क्षेत्र एवं विशेषताएं।

### इकाई – 2

1. लोक गाथा का सामान्य अध्ययन तथा अंचल की प्रमुख लोक गाथायें।
2 लोकगीत के प्रकारों– चैती, कजरी, दादरा का उपशास्त्रयीय संगीत में स्थान एवं महत्व
3 लोक संगीत का संक्षिप्त इतिहास।

### इकाई – 3

1. लोक नाट्य का सामान्य परिचय एवं लोक नाट्य में निहीत सांगीतिक तत्व।
2. अपने प्रदेश के अंचलों में प्रचलित लोक संगीत एवं लोक संस्कृति का सम्बन्ध निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर –

(1). गीत, (2). वाद्य, (3). लय व ताल, (4). वेशभूषा व आभूषण, (5). विभिन्न अवसरों के लोक वाद्य

### इकाई–4

1. लोक गीतों का फिल्मी गीतों पर प्रभाव एवं लोक नृत्य और योग का सम्बन्ध।
2. तीजन बाई एवं शारदा सिन्हा का परिचय एवं लोक संगीत में योगदान।

### इकाई–5

1. भारत के निम्नलिखित प्रमुख लोक वाद्यों का सामान्य परिचय–
नरसिंघा (हिमाचल), झाझन (गुजरात), पंजाबी ढोलक (पंजाब), काहिल (असम), तूर्य (उत्तर प्रदेश), ढोल (बिहार), गम्मौत (गोवा), तौलिया (राजस्थान), डप्पू (आन्ध्र प्रदेश) तर्पा (महाराष्ट्र), चेडा (केरल), पंगु (मणिपुर), नादस्वरम् (कर्नाटक), रवाब (जम्मू कश्मीर), डफ (हरियाणा), डुक्काई (तमिलनाडु), कांसी (पश्चिम बंगाल)।

2 लोक गीतों के स्वरूप एवं प्रकार यथा –
(1). संस्कार संबंधी (2). ऋतु संबंधी (3). श्रम सम्बन्धी (4). उत्सव सम्बन्धी
(5). ऐतिहासिक एवं राष्ट्रीय।

# सहायक विषय
## बी. म्यूज. षष्ट्म सेमेस्टर
## गायन/स्वर वाद्य
## (लोक संगीत प्रायोगिक)

**पूर्णांक–100**

1 अपने प्रदेश के अंचलों के सीखे हुये लोकगीतों में शास्त्रीय संगीत के तत्व और लोकगीत तथा शास्त्रीय संगीत से सम्बन्ध।

2 निम्नलिखित भारत के प्रमुख प्रतिनिधि लोकगीतों का अवसर, स्वर पक्ष, प्रयुक्त होने वाले वाद्य, लय व ताल तथा भावार्थ सहित किन्हीं तीन का व्यवहारिक ज्ञान।बुन्देलखण्डी (मध्यप्रदेश), लावणी, पोवाड़ा (महाराष्ट्र), गरबा (गुजरात), विदेशिया (बिहार), भांगड़ा या टप्पा (पंजाब), बादल या भटियाली (पश्चिम बंगाल), बीहू (असम), चैती या कजरी (उत्तर प्रदेश), नाटी या गिद्दा (हिमाचल प्रदेश), उड़िया (उड़ीसा), मणीपुरी (मणिपुर), ओणम (केरल), माथुरी (आन्ध्र प्रदेश), आदि।

3 सीखे हुये लोक गीतों के साथ वाद्यों को बजाने का सामान्य ज्ञान।

4 सीखे हुये किसी भी लोक रचना को स्वरबद्ध करने का अभ्यास।

## सन्दर्भ ग्रन्थ की सूची


(1) लोक गीतों की सांस्कृतिक भूमि – श्री विद्याचरण
(2) फोक सांग्स ऑफ इंडिया – श्री हेमाल्स
(3) भारत के लोक नृत्य – श्री लक्ष्मी नारायण
(4) राजस्थान का लोक संगीत – श्री देवीलाल सांभर
(5) मालवा के लोक गीत – डॉ. चिंतामणि उपाध्याय
(6) फोक कल्चर एवं ओरल टेडिरान्स – श्री एस. एल. श्रीवास्तव
(7) भोजपुरी लोक गीत – श्री कृष्ण देव उपाध्याय
(8) मैथली लोक गीतों का अध्ययन – डॉ. तेजनारायण लाल
(9) अवधि लोक गीत और परम्परा – श्री इंद्र प्रकाश पांडे
(10) बुन्देलखण्ड के लोक गीत – डॉ. उमाशंकर शुक्ल
(11) निमाड़ी लोक गीत – डॉ. राम नारायण अग्रवाल
(12) विन्ध्य के आदिवासियों के लोक गीत – श्री चन्द्र जैन
(13) मालवी लोकगीत एवं विवेचनात्मक अध्ययन – डॉ. चिन्तामणि उपाध्याय
(14) कुल्लू के लोकगीत – श्री एस. एस. रणधाना
(15) गढ़वाल के लोकगीत – श्री गोविन्द चातक
(16) लोक गीतों की सामाजिक व्याख्या – श्री कृष्णा दास
(17) कला और संस्कृति – श्री वासुदेव शर्मा
(18) लोक जीवन – कास कमलेश्वर
(19) भारतीय लोक साहित्य – डॉ. श्याम परमार
(20) भारतीय संस्कृति – डॉ. नल्दा प्रसाद मिश्र
(21) ब्रज लोक साहित्य की अभ्यास – डॉ. सत्येन्द्र
(22) बुन्देलखण्ड की संस्कृति तथा साहित्य – श्री श्याम नारायण मिश्र
(23) बुन्देलखण्डी लोक साहित्य – डॉ. रामस्वरूप स्नेही
(24) भारतीय लोक गीतों का संकलन – पं. दल्लन उपाध्याय
(25) कश्मीरी और हिन्दी के लोकगीत तुलनात्मक अध्ययन – पं. जवाहर लाल नेहरू
(26) भोजपुरी लोक संस्कृति एवं हिन्दुस्तानी संगीत – डॉ. संजय कुमार सिंह
(27) हिमाचल प्रदेश का लोक संगीत – केशव जानन्द
(28) आदिवासी लोक कला परिष्द – मध्यप्रदेश शासन भोपाल के समस्त प्रकाशन

# बी. म्यूज.–तृतीय सेमेस्टर (सुगम संगीत)

## संगीत–शास्त्र

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 50

इकाई–1

1. भारत में प्रचलित संगीत पद्धतियों के नाम एवं उनकी संक्षिप्त जानकारी।
2. 10 थाटों के नाम एवं उनके स्वरों की जानकारी।

इकाई–2

1. सुगम संगीत में प्रयोग किये जाने वाले वाद्यों के नाम एवं उनकी संक्षिप्त जानकारी।
2. पाठ्यक्रमानुसार अपने वाद्य का सचित्र वर्णन।

इकाई–3

1. वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, वर्ज्य स्वर, आरोह, अवरोह, पकड की परिभाषाएँ।
2. गीत, भजन एवं गजल में से किसी एक रचना को कंठस्थ कर लिखना।

इकाई–4

1 अपने पाठ्यक्रम के रागों में से किसी एक राग की सरगम लिखने का अभ्यास।
2 गीत, भजन, गजल में से किसी एक का भावार्थ लिखना।

इकाई–5

1 निम्नलिखित तालों को खण्ड, मात्रा, बोल सहित लिखना।
त्रिताल, दादरा, कहरवा, झपताल।
2 सुगम संगीत से संबंधित विषय पर निबंध लेखन।

## प्रायोगिक

पूर्णांक : 100

1 राग यमन एवं भैरव रागों में सरगम, लक्षणगीत एवं छोटे ख्याल का आलाप तानों सहित गायन।
2 बिलावल एवं कल्याण थाटों में 5–5 अलंकारों का गायन।
3 अनुमोदित संतों, कवियों, गीतकारों, शायरों द्वारा रचित (दो–दो) गीत, भजन ,गजल का गायन।
4 देश के किसी भी क्षेत्र के दो लोकगीतों का गायन।
5 हाथ से ताल देकर निम्नलिखित तालों का ठाह,दुगुन मे प्रदर्शनः–
त्रिताल, दादरा, कहरवा।

# बी. म्यूज.–चतुर्थ सेमेस्टर (सुगम संगीत)
## संगीत–शास्त्र

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 50

इकाई–1

1 निम्नलिखित का संक्षिप्त परिचयः–
गालिब, सूरदास, मीराबाई, फैज, नीरज, निराला, गुरूनानक, तुलसीदास, कबीरदास।

2 थाट एवं राग की परिभाषा एवं दोनों में तुलना।

इकाई–2

1 वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, वर्जित स्वर, स्थायी, अंतरा, संचारी, आभोग की परिभाषाएँ।

2 गीत शैलियों की संक्षिप्त जानकारीः–
ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी, टप्पा।

इकाई–3

1. लय, ताल, मात्रा, सम, खाली, भरी की परिभाषा।

2. जूनियर डिप्लोमा के समस्त तालों सहित निम्नांकित तालों का मात्रा, खण्ड, बोल सहित लेखन।
(अ) दीपचन्दी (ब) एकताल (स) रूपक

इकाई–4

1 निम्न वाद्यों की संक्षिप्त जानकारी :–
(अ) मंजीरा (ब) सितार (स) बांसुरी (द) तानपुरा

2 सुगम संगीत एवं लोक संगीत की विषेषताओं की जानकारी।

इकाई–5

1 गीत, गजल, भजन में से किसी एक को कंठस्थ कर पूरा लिखना।

2 निबंध :–
(अ) प्रिय गजल या भजन गायक
(ब) दूरदर्शन के आकर्षक सुगम संगीत कार्यक्रम
(स) वर्तमान फिल्मी संगीत की समीक्षा
(द) सुगम एवं शास्त्रीय संगीत

## प्रायोगिक

पूर्णांक : 125

1 निम्नलिखित संत, गीतकार एवं शायरों के चार भजन, चार गीत एवं चार गजलों का प्रशिक्षण।
(1) तुलसीदास (2) सूरदास (3) मीराबाई (4) गुरूनानक (5) कबीर (6) निराला (7) नीरज (8) सुमित्रानंदन पंत (9) बच्च्न (10) फैज (11) गालिब (12) जफर (13) मीर (14) जिगर (15) महादेवी वर्मा

2 राग काफी एवं खमाज रागों में लक्षण गीत, सरगम, छोटा ख्याल का 5–5 तानों सहित गायन।

3 देश के किसी भी क्षेत्र में प्रचलित दो लोकगीत।

4 हारमोनियम बजाकर किसी एक रचना का गायन।

5 पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों को ठाह, दुगुंन, चौगुन को हाथ से ताली देकर बोलने का अभ्यास :–
(अ) दीपचन्दी (ब) एकताल (स) रूपक

# बी.ए.–गायन / स्वरवाद्य
## प्रथम सेमेस्टर
## शास्त्र प्रश्न–पत्र

शास्त्र प्रश्न पत्र : 35

समय : 3 घण्टे

सी. सी ई.: 15

पूर्णांक : 50

इकाई–1

1. परिभाषाएँ :– संगीत, नाद, श्रुति, स्वर (शुद्ध, विकृत), सप्तक, थाट एवं राग।
2. दस थाटों के नाम व स्वर, राग एवं थाटों का तुलनात्मक अध्ययन।

इकाई –2

1 आश्रय राग, वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, वर्जित स्वर, आरोह, अवरोह व जाति का सामान्य अध्ययन।
2. राग की जाति का सामान्य अध्ययन।

इकाई–3

1. नाद की परिभाषा, प्रकार व विशेषताएँ।
2. गायन के परीक्षार्थियों के लिये तानपुरा तथा वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये अपने–अपने वाद्य का सामान्य परिचय तथा उनके विभिन्न अवयवों का सचित्र ज्ञान।

इकाई–4

1. ध्रुपद, धमार, ख्याल, तराना, लक्षणगीत, स्वरमालिका (सरगम), मसीतखानीगत व रजाखानी गत का परिचय।
2. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों का वर्णन। (यमन, भैरव, खमाज, दर्गा (बिलावल थाट) वृन्दावनी सारंग)

इकाई–5

1. पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे का जीवन परिचय एवं संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान।
2. पाठ्यक्रम के निर्धारित तालों को ठाह लय में लिखने का अभ्यास। (त्रिताल,एकताल, दादरा एवं कहरवा)

## प्रायोगिक

बाह्य मूल्यांकन : 80
आंतरिक मूल्यांकन : 20
पूर्णांक : 100

1. यमन व भैरव थाटों में दस–दस अलंकारों का अभ्यास।
2. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों –यमन, भैरव, खमाज, दुर्गा (बिलावल थाट), वृन्दावनी सारंग में सरगम, लक्षणगीत, छोटा ख्याल एवं दो बडे ख्याल।वाद्य के विद्यार्थियों के लिये मसीतखानी गत (किन्हीं दो रागों में) एवं सभी रागों में रजाखानी गत का प्रदर्षन।
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में एक ध्रुपद या एक धमार एवं एक तराना। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये किसी धुन को अपने वाद्य पर प्रस्तुत करना।
4. आकाशवाणी द्वारा मान्य वन्दे मातरम् का स्वरलय में गायन अथवा वादन।
5. त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा तालों का हाथ से ताली देकर प्रदर्शन तथा दुगुन का अभ्यास।

## संदर्भ ग्रंथ


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन

# बी.ए.–गायन / स्वरवाद्य
# द्वितीय सेमेस्टर
# शास्त्र प्रश्न–पत्र

शास्त्र प्रश्न पत्र : 35

समय : 3 घण्टे

सी. सी ई.: 15

पूर्णांक : 50

इकाई–1

1. मींड, कण, खटका, मुर्की, आलाप, तान, बोल (मिजराब / जवा के बोल) (प्रहार) आकर्ष (अपकर्ष), सूत, जमजमा और तोडा का पारिभाषिक परिचय।
2. लय (विलंबित, मध्य, द्रुत), ठाह, दुगुन, मात्रा, ताल, विभाग, सम, ताली, खाली, ठेका व आवर्तन की जानकारी।

इकाई–2

1. गायक / वादक के गुण–दोष।
2. शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत एवं लोकगीत का ज्ञान तथा गीत, गजल, होरी का परिचय एवं महत्व।

इकाई–3

1. राजा मानसिंह तोमर, स्वामी हरिदास का जीवन परिचय तथा संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान।
2. भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति का अध्ययन।

इकाई–4

1. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों का शास्त्रीय परिचय– बिलावल या अल्हैया बिलावल, भूपाली, भीमपलासी, बिहाग, काफी।
2. निम्न अ एवं ब को पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर पद्धति में लिखने का अभ्यास :–

   (अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिये –

   1 पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका या लक्षणगीत।

   2 पाठ्यक्रम के रागों में एक एक मध्य लय ख्याल।

   (ब) स्वरवाद्य के परीक्षार्थियों के लिये –

   1 पाठ्यक्रम के रागों में एक–एक विलंबित गत या मसीतखानी गत।

   2 पाठ्यक्रम के रागों में से एक मध्य लय गत अथवा रजाखानी।

इकाई–5

1. पाठ्यक्रम के निर्धारित तालों को ठाह, लय एवं दुगुन में लिखने का अभ्यास झपताल, चौताल, धमार तथा त्रिताल।
2. लगभग 300 शब्दों में संगीत संबंधी विषय पर निबंध लेखन।

## (प्रायोगिक)

बाह्य मूल्यांकन : 80
आंतरिक मूल्यांकन : 20
पूर्णांक : 100

1. बिलावल एवं खमाज थाटों में 10–10 अलंकारों का अभ्यास।
2. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में सरगम, लक्षण गीत, छोटाख्याल एवं दो बड़े ख्याल। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये रजाखानीगत एवं मसीतखानी गत (कोई दो)
   बिलावल या अल्हैया बिलावल, भूपाली, भीमपलासी, विहाग, काफी
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित में एक ध्रुपद, एक धमार, तथा एक तराना। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये किसी एक राग में तीन ताल से भिन्न अन्य ताल में कोई रचना या धुन का अपने वाद्य पर प्रदर्शन।
4. झपताल, चौताल, धमार तथा त्रिताल का हाथ से ताली देकर प्रदर्शन तथा दुगुन या चौगुन का प्रदर्शन।
5. आकाशवाणी द्वारा मान्य वन्दे मातरम/भजन/देशभक्ति गीत का स्वरलय में गायन अथवा वादन।

### :संदर्भ ग्रंथः


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन

# बी.ए.–गायन / स्वरवाद्य
# तृतीय सेमेस्टर
# शास्त्र प्रश्न–पत्र

समय : 3 घण्टे

शास्त्र प्रश्न पत्र : 35
सी. सी ई .: 15
पूर्णांक : 50

इकाई–1

1. बाईस श्रुतियों में वर्तमान सप्तक की स्वर स्थापना (पं. भातखण्डे जी के अनुसार)।
2. गीत के अवयव – स्थायी, अंतरा, संचारी, आभोग।

इकाई–2

1 पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों का शास्त्रीय विवेचन।
2 पाठ्यक्रम के रागों को भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लिखने का अभ्यास।

इकाई–3

1 पूर्वांग, उत्तरांग, वर्ण, अलंकार (पल्टा), स्थायी, अंतरा, संचारी, आभोग की परिभाषा।
2 अल्पत्व, बहुत्व, निबद्ध, अनिबद्ध की परिभाषा।

इकाई–4

1 संगीत की उत्पत्ति के विभिन्न मत।
2 संगीतोपयोगी ध्वनि की विशेषताएँ।

इकाई–5

1 पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर एवं अमीर खुसरो का संगीत में योगदान।
2 स्वामी हरिदास एवं तानसेन का जीवन परिचय।

## प्रायोगिक

बाह्य मूल्यांकन : 80
आंतरिक मूल्यांकन : 20
पूर्णांक : 100

1 कल्याण तथा काफी थाटों में 10–10 अलंकारों का अभ्यास।

2 पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों (मालकौंस, देशकार, आसावरी, केदार एवं हमीर) में सरगम, लक्षणगीत, छोटा ख्याल तथा 2 बडे ख्याल ।

वाद्य के विद्यार्थियों के लिये मसीतखानी गत (कोई दो) एवं रजाखानी गत सभी रागों में (ताल आलाप सहित)।

3 पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में एक ध्रुपद तराना एवं भजन ।

वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये त्रिताल के अलावा अन्य ताल में गत।

4. झपताल, तीनताल, चौताल, आडाचौताल तथा रूपक में दुगुन, चौगुन।

## :संदर्भ ग्रंथः


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन

# बी.ए.–गायन / स्वरवाद्य
## चतुर्थ सेमेस्टर
## प्रथम प्रश्न–पत्र

समय : 3 घण्टे

शास्त्र प्रश्न पत्र : 35
सी. सी ई. : 15
पूर्णांक : 50

इकाई–1

1 पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों की रचनाओं को पं. विष्णुनारायण भातखण्डे स्वरलिपि एवं ताल लिपि पद्धति का अभ्यास)।
2 संधिप्रकाश, परमेल प्रवेशक रागों की संक्षिप्त जानकारी।

इकाई–2

1 हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटकी स्वर सप्तकों का अध्ययन।
2 शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, लोक संगीत का ज्ञान तथा गीत, गजल, भजन का परिचय एवं महत्व।

इकाई–3

1 पूर्वराग, उत्तरांग, वादी, संवादी का राग गायन में महत्व।
2 गमक की परिभाषा एवं उसके प्रकार।

इकाई–4

1 हस्सू खॉ, हद्दू खॉ, सदारंग, अदारंग का जीवन परिचय।
2 उ. बाबा अलाउद्दीन खॉ का संगीत के क्षेत्र में योगदान।

इकाई–5

1 पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों का शास्त्रीय विवेचन।
2 ताल धमार, दीपचन्दी को ठाह, दुगुन सहित ताललिपि में लेखन।

## प्रायोगिक

बाह्य मूल्यांकन : 80
आंतरिक मूल्यांकन : 20
पूर्णांक : 100

1 आसावरी तथा भैरव थाट में 10–10 अलंकारों का अभ्यास।
2 बागेश्री, देस, कामोद, जौनपुरी एवं रामकली रागों में सरगम, लक्षण गीत, छोटा ख्याल तथा 2 बडे ख्याल आलाप तान सहित। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये मसीतखानी गत (कोई दो) एवं सभी रागों में रजाखानी गत (तान, आलाप सहित)।
3 पाठ्यक्रम के रागों में एक ध्रुपद, एक धमार एक तराना तथा वाद्य के विद्यार्थियों के लिये धुन।
4 एकताल, तीनताल, झपताल, कहरवा तथा धमार की दुगुन एवं चौगुन ।

## :संदर्भ ग्रंथः


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन

# बी.ए.–गायन / स्वरवाद्य
## पंचम सेमेस्टर
## प्रथम प्रश्न–पत्र

समय : 3 घण्टे

शास्त्र प्रश्न पत्र : 35
सी. सी ई.: 15
पूर्णांक : 50

इकाई–1

1 बाईस श्रुतियों के नाम एवं उनके शुद्ध विकृत बारह स्वरों की स्थापना।
2 राग के समय सिद्धांत की जानकारी।

इकाई–2

1 पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों का शास्त्रीय विवेचन।
2 पाठ्यक्रम के रागों की विलम्बित एवं मध्यलय की रचनाओं को स्वरलिपि में लिखना।

इकाई–3

1 वाद्य वर्गीकरण की सामान्य जानकारी।
2 शुद्ध, छायालग एवं संकीर्ण रागों का सामान्य परिचय।

इकाई–4

1 गांधर्व गान, मार्गी देशी का सामान्य परिचय।
2 घरानों की परिभाषा एवं स्पष्टीकरण।

इकाई–5

1 ग्वालियर एवं आगरा घराने का सामान्य परिचय।
2 पं. कृष्णराव षंकर पंडित एवं पं. राजाभैया पूछवाले का जीवन परिचय।

## प्रायोगिक

बाह्य मूल्यांकन : 80
आंतरिक मूल्यांकन : 20
पूर्णांक : 100

1 पूर्वी तथा मारवा थाट में 10–10 अलंकारों का अभ्यास।
2 दरबारी कान्हडा, पूरिया, मियॉ मल्हार, अडाणा एवं मुलतानी रागों में सरगम, लक्षण गीत, छोटा ख्याल तथा दो बडे ख्याल आलाप तान सहित। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये मसीतखानी गत (कोई दो) एवं रजाखानी गत सभी रागों में (आलाप, तान सहित)।
3 पाठ्यक्रम के रागों में एक ध्रुपद एक धमार एक तराना। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये धुन।
4 धमार, तिलवाडा, चौताल, तीव्रा, सूलताल का ज्ञान एवं दुगुन चौगुन हाथ पर ताली देकर प्रदर्शन।

## :संदर्भ ग्रंथः


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन

## बी.ए.–गायन / स्वरवाद्य
## सेमेस्टर षष्टम

समय : 3 घण्टे

शास्त्र प्रश्न पत्र : 35
सी. सी ई.: 15
पूर्णांक : 50

इकाई–1

1. टोन, मेजरटोन, माईनर टोन, सेमीटोन का सामान्य ज्ञान।
2. स्केल, नेचरल स्केल, डायटोनिक स्केल का सामान्य परिचय।

इकाई–2

1. हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक सप्तकों का तुलनात्मक अध्ययन।
2. राग के ग्रह आदि (दस लक्षण) लक्षणों का विस्तृत अध्ययन।

इकाई–3

1. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों का शास्त्रीय विवेचन।
2. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों को विलम्बित एवं मध्यलय की रचनाओं का स्वर एवं ताललिपि में लेखन।

इकाई–4

1. ठुमरी, चैती, कजरी तथा कब्बाली का परिचय।
2. ताललिपि में धमार, चौताल, झूमरा, आडाचौताल तथा सूलताल का लेखन।

इकाई–5

1. तत (तंत्री) अवनद्ध, घन, एवं सुषिर वाद्य वर्गीकरण का अध्ययन।
2. पं. ओंकारनाथ ठाकुर, पं. वी.जी. जोग, उ. हाफिज अली खॉ का जीवन परिचय।

## प्रायोगिक

बाह्य मूल्यांकन : 80
आंतरिक मूल्यांकन : 20
पूर्णांक : 100

1 तोडी एवं भैरवी थाटों में 10–10 अलंकारों का अभ्यास।

2 छायानट, पूरियाधनाश्री, तोडी, वसंत एवं सोहनी रागों में सरगम, लक्षणगीत, छोटाख्याल तथा दो बडे ख्याल आलाप तान सहित। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये मसीतखानी गत (कोई दो) एवं सभी रागों में रजाखानी गत (आलाप, तान सहित)।

3 पाठयक्रम के रागों में ध्रुपद, धमार, तथा तराना (1–1)। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये धुन।

4 त्रिताल, चौताल, एकताल, कहरवा तथा झपताल का दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लय में हाथ से ताली देकर प्रदर्शन।

## :संदर्भ ग्रंथः


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन

# बी. ए. ऑनर्स गायन/स्वरवाद्य
## प्रथम सेमेस्टर
## शास्त्र प्रश्न–पत्र

शास्त्र प्रश्न पत्र : 35
समय : 3 घण्टे सी. सी ई.: 15
पूर्णांक : 50

इकाई–1

1. परिभाषाएँ :– संगीत, स्वर (शुद्ध, विकृत), सप्तक,।
2. दस थाटों के नाम।

इकाई –2

1. वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, वर्जित स्वर, आरोह, अवरोह की सामान्य जानकारी।
2. राग की जाति का सामान्य अध्ययन।

इकाई–3

1. नाद की परिभाषा व प्रकार।
2. गायन के परीक्षार्थियों के लिये तानपुरा तथा वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये अपने–अपने वाद्य का सामान्य परिचय।

इकाई–4

1. ख्याल, तराना, लक्षणगीत, स्वरमालिका (सरगम), मसीतखानीगत व रजाखानी गत का परिचय।
2. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों का वर्णन। (यमन, भैरव, खमाज, एवं आसावरी)

इकाई–5

1. पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे का जीवन परिचय एवं संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान।
2. पाठ्यक्रम के निर्धारित तालों को ठाह लय में लिखने का अभ्यास। (त्रिताल, एकताल, दादरा एवं कहरवा)

## प्रायोगिक

बाह्य मूल्यांकन : 80
आंतरिक मूल्यांकन : 20
पूर्णांक : 100

1. यमन व भैरव थाटों में दस–दस अलंकारों का अभ्यास।
2. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों –यमन, भैरव, खमाज, तथा आसावरी में सरगम, लक्षणगीत, छोटा ख्याल एवं दो बडे ख्याल। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये मसीतखानी गत (किन्हीं दो रागों में) एवं सभी रागों में रजाखानी गत का प्रदर्शन।
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में एक तराना एवं एक भजन। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये किसी धुन को अपने वाद्य पर प्रस्तुत करना।
4. आकाशवाणी द्वारा मान्य वन्दे मातरम् का स्वरलय में गायन अथवा वादन।
5. त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा तालों का हाथ से ताली देकर प्रदर्शन तथा दुगुन का अभ्यास।

## संदर्भ ग्रंथ


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन

# बी. ए. ऑनर्स गायन/स्वरवाद्य
## द्वितीय सेमेस्टर
## शास्त्र प्रश्न–पत्र

शास्त्र प्रश्न पत्र : 35
समय : 3 घण्टे सी. सी ई.: 15
पूर्णांक : 50

इकाई–1

1. मींड, कण, खटका, मुर्की, आलाप, तान, सूत, और जमजमा का पारिभाषिक परिचय।
2. लय (विलंबित, मध्य, द्रुत), ठाह, दुगुन, मात्रा, ताल, विभाग, सम, ताली, खाली, ठेका व आवर्तन की जानकारी।

इकाई–2

1. गायक/वादक के गुण–दोष।
2. शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत एवं लोकगीत का ज्ञान।

इकाई–3

1 राजा मानसिंह तोमर, स्वामी हरिदास का जीवन परिचय तथा संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान।

2 भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति का अध्ययन।

इकाई–4

1 पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों का शास्त्रीय परिचय– बिलावल या अल्हैया बिलावल, भूपाली एवं काफी।

2 निम्न अ एवं ब को पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर पद्धति में लिखने का अभ्यास :–

(अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिये –

1 पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका या लक्षणगीत।

2 पाठ्यक्रम के रागों में एक एक मध्य लय ख्याल।

(ब) स्वरवाद्य के परीक्षार्थियों के लिये –

1 पाठ्यक्रम के रागों में एक–एक विलंबित गत या मसीतखानी गत।

2 पाठ्यक्रम के रागों में से एक मध्य लय गत अथवा रजाखानी।

इकाई–5

1. पाठ्यक्रम के निर्धारित तालों को ठाह, लय एवं दुगुन में लिखने का अभ्यास झपताल, चौताल तथा त्रिताल।
2. लगभग 300 शब्दों में संगीत संबंधी विषय पर निबंध लेखन।

## (प्रायोगिक)

बाह्य मूल्यांकन : 80
आंतरिक मूल्यांकन : 20
पूर्णांक : 100

1. बिलावल एवं खमाज थाटों में 10–10 अलंकारों का अभ्यास।
2. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में सरगम, लक्षण गीत, छोटाख्याल एवं दो बड़े ख्याल। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये रजाखानीगत एवं मसीतखानी गत (कोई दो)
   बिलावल या अल्हैया बिलावल, भूपाली तथा काफी
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित में एक ध्रुपद, एक धमार, तथा एक तराना। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये किसी एक राग में तीन ताल से भिन्न अन्य ताल में कोई रचना या धुन का अपने वाद्य पर प्रदर्शन।
4. झपताल, चौताल तथा त्रिताल का हाथ से ताली देकर प्रदर्शन तथा दुगुन या चौगुन का प्रदर्शन।
5. आकाशवाणी द्वारा मान्य वन्दे मातरम/भजन/देशभक्ति गीत का स्वरलय में गायन अथवा वादन।

## :संदर्भ ग्रंथः


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन

**बी. ए. ऑनर्स तृतीय वर्ष गायन/स्वरवाद्य**
**पंचम सेमेस्टर**
**प्रथम प्रश्न–पत्र**
**संगीत का इतिहास**

समय : 3 घण्टे

शास्त्र प्रश्न पत्र : 42
सी.सी ई. : 8
पूर्णांक : 50

इकाई–1

1 बाईस श्रुतियों के नाम एवं उनके शुद्ध स्वरों की स्थापना। (प्राचीन मतानुसार)
2 राग के समय सिद्धांत की जानकारी।

इकाई–2

1 गमक की परिभाषा एवं उसके प्रकार।
2 पाठ्यक्रम के रागों की विलम्बित एवं मध्यलय की रचनाओं को स्वरलिपि में लिखना।

इकाई–3

1 वाद्य वर्गीकरण की सामान्य जानकारी।
2 शुद्ध, छायालग एवं संकीर्ण रागों का सामान्य परिचय।

इकाई–4

1 गांधर्व गान, मार्गी देशी का सामान्य परिचय।
2 संगीत की उत्पत्ति की सामान्य जानकारी एवं घरानों की परिभाषा एवं महत्व।

इकाई–5

1 ग्वालियर एवं आगरा घराने का सामान्य परिचय।
2 पं. कृष्णराव शंकर पंडित एवं पं. राजाभैया पूछवाले का जीवन परिचय।

## बी. ए. ऑनर्स तृतीय वर्ष गायन/स्वरवाद्य
## पंचम सेमेस्टर
## द्वितीय प्रश्न–पत्र
## संगीत की शैलियां एवं रागों तालो का अध्ययन

समय : 3 घण्टे

शास्त्र प्रश्न पत्र : 42
सी. सी ई.: 08
पूर्णांक : 50

इकाई –1

1. हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटकी स्वर सप्तकों का अध्ययन।
2. संधिप्रकाश, परमेल प्रवेशक रागों की संक्षिप्त जानकारी।

इकाई –2

1. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों का अन्य रागों से तुलनात्मक अध्ययन एवं शास्त्रीय विवेचन। (मालकौंस,देशकार, केदार, रागेश्री, हमीर)
2. शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, लोक संगीत का ज्ञान तथा गीत, गजल, भजन का परिचय एवं महत्व।

इकाई–3

1. पूर्वराग, उत्तरांग, वादी, संवादी का राग गायन में महत्व।
2. स्थाई, अंतरा, संचारी तथा आभोग की परिभाषा।

इकाई –4

1. हस्सू खॉ, हद्दू खॉ, सदारंग, अदारंग का जीवन परिचय।
2. उ. बाबा अलाउद्दीन खॉ का संगीत के क्षेत्र में योगदान।

इकाई –5

1. समान मात्रा की तालों का तुलनात्मक अध्ययन।
2. ताल धमार, दीपचन्दी को ठाह एवं दुगुन लयकारी में लिखने का अभ्यास।

## बी.ए.ऑनर्स तृतीय वर्ष गायन/स्वरवाद्य
## पंचम सेमेस्टर
## प्रायोगिक:-1 प्रदर्शन एवं मौखिक

**पूर्णांक : 200**

1 पूर्व पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति एवं अलंकारों का अभ्यास।

2 मालकौंस, देशकार, केदार, हमीर तथा रागेश्री रागों में सरगम, लक्षण गीत, छोटा ख्याल तथा दो

छोटा ख्याल तथा दो बडे ख्याल आलाप तान सहित। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये

रजाखानी गत (कोई दो) एवं मसीतखानी गत सभी रागों में (आलाप, तान सहित)।

3 पाठ्यक्रम के रागों में एक ध्रुपद एक धमार एक तराना। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये धुन।

4 धमार, तिलवाडा, चौताल, तीव्रा, सूलताल का ज्ञान एवं दुगुन चौगुन हाथ पर ताली देकर प्रदर्शन।

## बी. ए. ऑनर्स तृतीय वर्ष गायन/स्वरवाद्य
## पंचम सेमेस्टर
## प्रायोगिक:-2 मंच प्रदर्शन

**पूर्णांक : 150**

1.पाठ्यक्रम के रागों में से किसी एक राग का विलंबित, द्रुत ख्याल एवं तराना सहित लगभग 30 मिनिट गायन।

2. पाठ्यक्रम के किसी भी राग में एक ध्रुपद अथवा धमार का लयकारियों सहित गायन।

अथवा

किसी एक भजन अथवा सुगम संगीत रचना की प्रस्तुति।

# *आंतरिक मूल्यांकन*

**पूर्णांकः 50**

**आवश्यक निर्देश–:** आंतरिक मूल्यांकन के अन्तर्गत प्रत्येक सेमेस्टर एवं प्रत्येक कोर्स के विद्यार्थियों को प्रायोगिक परीक्षा के समय दो फाईल प्रस्तुत करनी होगी।

1. कक्षा में सीखे गये रागो की स्वर लिपि/तोड़ो का विवरण
2. विश्वविद्यालय एवं नगर में आयोजित संगीत कार्यक्रमों की रिर्पोट

## :संदर्भ ग्रंथः


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. संगीत शास्त्र दर्पण – श्री शांति गोवर्धन
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. सितार मलिका –
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. संगीत वाद्य – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12.राग शास्त्र – डॉ. गीता बैनर्जी
13.संगीत मणि – डॉ. महारानी शर्मा
14.प्रणव भारती – पं. ओमकारनाथ ठाकुर
15.संगीतांजली – पं. ओमकारनाथ ठाकुर

**बी. ए. ऑनर्स तृतीय वर्ष गायन/स्वरवाद्य**
**सेमेस्टर षष्टम**
**प्रथम प्रश्न पत्र**
**संगीत पद्वतियों का सामान्य अध्ययन**

समय : 3 घण्टे

शास्त्र प्रश्न पत्र : 42
सी. सी ई.: 8
पूर्णांक : 50

इकाई–1

1. टोन, मेजरटोन, माईनर टोन, सेमीटोन का सामान्य ज्ञान।
2. स्केल, नेचरल स्केल, डायटोनिक स्केल का सामान्य परिचय।

इकाई–2

1. हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक तालों का अध्ययन एवं तुलना।
2. राग के ग्रह आदि (दस लक्षण) लक्षणों का विस्तृत अध्ययन।

इकाई–3

1 पूर्वांग उत्तरांग एवं वर्ण अलंकार की जानकारी।
2 गुरू शिष्य पंरपरा एवं संस्थागत शिक्षण

इकाई–4

1. गीत, गजल, भजन का परिचय एवं महत्व।
2. राग समय सिद्धांत की संक्षिप्त जानकारी।

इकाई–5

1. तत (तंत्री) अवनद्ध, घन, एवं सुषिर वाद्य वर्गीकरण का अध्ययन।
2. पं. ओंकारनाथ ठाकुर, पं. वी.जी. जोग, उ. हाफिज अली खॉ का जीवन परिचय।

## बी. ए. ऑनर्स तृतीय वर्ष गायन/स्वरवाद्य
## सेमेस्टर षष्टम
## द्वितीय प्रश्न पत्र
## संगीत शैलियों घरानों एवं रागों का सामान्य अध्ययन

समय : 3 घण्टे

शास्त्र प्रश्न पत्र : 42
सी.सी ई. : 8
पूर्णांक : 50

### इकाई–1

1. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों की रचनाओं को पं. विष्णु नारायण भातखण्डे स्वरलिपि एवं ताललिपि पद्धति में लेखन।
2. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों का शास्त्रीय विवेचन। (छायानट, भीमपलासी, तिलक कमोद, पटदीप, तोडी)

### इकाई–2

1. स्वरवाद्य के मुख्य घरानों का अध्ययन ।
2. ख्याल गायन के ग्वालियर,आगरा,पटियाला,जयपुर और किराना घरानों का सामान्य परिचय।

### इकाई–3

1. ताल के दस प्राणों का अध्ययन।
2 दीपचंदी, चौताल, झूमरा, आडाचौताल तथा सूलताल का ताललिपि में लेखन।

### इकाई–4

1. टप्पा, चैती, कजरी तथा कव्वाली का परिचय।
2. आड, कुआड, बिआड लयकारियों की परिभाषा।

### इकाई–5

1. लयकारियों में पाठ्यक्रम के तालों को लिपिबद्ध करने का अध्ययन।
2. संगीत संबंधी विषय पर लगभग 200 शब्दों में निबन्ध लेखन।

## बी. ए. ऑनर्स तृतीय वर्ष गायन/स्वरवाद्य
## सेमेस्टर षष्टम
## प्रायोगिक:-1 प्रदर्शन एवं मौखिक

पूर्णांक : 200

1 पूर्व पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति एवं विभिन्न अलंकारों का अभ्यास।
2 छायानट, भीमपलासी, तिलक कामोद, पटदीप एवं तोडी, रागों में सरगम, लक्षणगीत, छोटाख्याल तथा दो बडे ख्याल आलाप तान सहित। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये रजाखानी गत (कोई दो) एवं सभी रागों में मसीतखानी गत (आलाप, तान सहित)।
3 पाठयक्रम के रागों में ध्रुपद, धमार, तथा तराना (1–1)। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये धुन।
4 त्रिताल, चौताल, एकताल, कहरवा तथा झपताल का दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लय में हाथ से ताली देकर प्रदर्शन।

## बी. ए. ऑनर्स तृतीय वर्ष गायन/स्वरवाद्य
## सेमेस्टर षष्टम
## प्रायोगिक:-2 मंच प्रदर्शन

**पूर्णांक : 150**

1. पाठ्यक्रम के रागों में से किसी एक राग का विलंबित, द्रुत ख्याल एवं तराना सहित लगभग 30 मिनिट गायन।
2. पाठ्यक्रम के किसी भी राग में एक ध्रुपद अथवा धमार का लयकारियों सहित गायन।

   अथवा

   किसी एक भजन अथवा सुगम संगीत रचना की प्रस्तुति।

## *आंतरिक मूल्यांकन*

**पूर्णांकः 50**

**आवश्यक निर्देश–:** आंतरिक मूल्यांकन के अन्तर्गत प्रत्येक सेमेस्टर एवं प्रत्येक कोर्स के विद्यार्थियों को प्रायोगिक परीक्षा के समय दो फाईल प्रस्तुत करनी होगी।

1. कक्षा में सीखे गये रागो की स्वर लिपि/तोड़ो का विवरण
2. विश्वविद्यालय एवं नगर में आयोजित संगीत कार्यक्रमों की रिर्पोट

## :संदर्भ ग्रंथः


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. संगीत शास्त्र दर्पण – श्री शांति गोवर्धन
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. सितार मलिका –
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. संगीत वाद्य – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12.राग शास्त्र – डॉ. गीता बैनर्जी
13.संगीत मणि – डॉ. महारानी शर्मा
14.प्रणव भारती – पं. ओमकारनाथ ठाकुर
15.संगीतांजली – पं. ओमकारनाथ ठाकुर

## एम.म्यूज.–गायन / स्वरवाद्य
## प्रथम सेमेस्टर– प्रथम प्रश्न पत्र (सैद्धांतिक)
## भारतीय संगीत का इतिहास

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 70

इकाई–1

1. संगीत की उत्पत्ति से संबंधित विभिन्न मान्यताओं, भारतीय एवं पाश्चात्य मतों का परिचय।
2. संगीत के स्वर्णयुग की अवधारणाएँ।

इकाई–2

1. भरतकृत नाट्यशास्त्र का सामान्य परिचय व संगीत से संबंधित अध्यायों की विषय सामग्री की जानकारी।
2. जाति की परिभाषा, लक्षण तथा भेद।

इकाई–3

1. ग्राम की परिभाषा एवं प्रकार तथा ग्राम की लोप विधि के आधार पर बनने वाली 84 शुद्ध तानों का ज्ञान।
2. श्रुति स्वर स्थापना विधि (विस्तृत जानकारी सहित)

इकाई–4

1. भारतीय संगीत में वाद्यों के वर्गीकरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
2. आधुनिक थाट वर्गीकरण (पं. विष्णु नारायण भातखण्डे के अनुसार)।

इकाई–5

1. इब्राहीम आदिल शाह (द्वितीय), कृष्णानंद व्यास, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, पं. एस. एन. रातंजनकर, संत पुरन्दरदास, मुस्तु स्वमी दीक्षित का सांगीतिक योगदान।

## एम.म्यूज.–गायन / स्वरवाद्य
## प्रथम सेमेस्टर– द्वितीय प्रश्न पत्र (सैद्धांतिक)
## निबंध सांगीतिक रचना एवं राग विवरण

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 70

इकाई–1

1. न्यूनतम 600 शब्दों में संगीत विषयक निबंध।

इकाई–2

1. दिये गये पद्यांश अथवा वाद्यगत बोल रचना को पाठ्यक्रम में से उपयुक्त राग व ताल को चुनकर उसमें निबद्ध करना।

इकाई–3

3. निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय विवरण :–
   मारूबिहाग, श्यामकल्याण, पूरिया कल्याण, शुद्ध कल्याण, भूपालतोडी, गुर्जरी तोडी, शंकरा एवं सोनी।

# एम.म्यूज.–गायन/स्वरवाद्य
## प्रथम सेमेस्टर–तृतीय प्रश्न पत्र (सैद्धांतिक)
## संगीत शास्त्र के क्रियात्मक सिद्धांत

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 70

इकाई–1

1. रागांग वर्गीकरण का परिचय व विस्तृत अध्ययन।
4. भैरव, तोडी रागांगों का विशेष अध्ययन तथा इन अंगों के अंतर्गत आने वाले रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

इकाई–2

1. राग रागिनी वर्गीकरण तथा मेल राग वर्गीकरण।
2. घराने का अर्थ एवं महत्व, ख्याल गायन के ग्वालियर व पटियाला घरानों की जानकारी।

इकाई–3

1. काकू, कुतुप, वृन्द का शास्त्रीय परिचय।
2. विभिन्न प्रकार की बंदिशों एवं गतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

इकाई–4

1. काव्य व संगीत का संबंध।
2. छंद और ताल का संबंध।

इकाई–5

1. पाठ्यक्रम के निर्धारित तालों को आड लयकारी में लिखने का अभ्यास।
2. भारतीय संगीत के लिये आवश्यक कंठ संस्कार की विधि।

## प्रायोगिक

बाह्य मूल्यांकन : 80
आंतरिक मूल्यांकन : 20
पूर्णांक : 100

1. निम्नलिखित रागों में से किन्हीं छः रागों में विलम्बित ख्याल/मसीतखानी गत एवं सभी रागों में छोटा ख्याल/रजाखानी गत का विस्तृत गायकी या तंत्रकारी सहित प्रस्तुततीकरण। राग :– मारूबिहाग, श्यामकल्याण,
2. शुद्धकल्याण, सोहनी, भूपालतोडी, शंकरा, पूरियाकल्याण, गुर्जरी तोडी।
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से एक ध्रुपद, एक धमार उपज सहित व लयकारियों सहित प्रस्तुत करना।
4. पाठ्यक्रम के रागों में से एक तराना या त्रिवट/चतुरंग का गायकी सहित प्रदर्शन। वाद्य के परीक्षार्थियों हेतु तीनताल से पृथक किन्हीं अन्य दो तालों में रचनाओं का आलाप, तान सहित वादन।

## प्रायोगिक (मंच प्रदर्शन)

बाह्य मूल्यांकन : 80
आंतरिक मूल्यांकन : 20
पूर्णांक : 100

1 परीक्षार्थी द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम में से कोई एक राग चुनकर विलम्बित एवं मध्य लय की रचना का विस्तृत गायकी/तंत्रकारी सहित प्रदर्शन।

2 परीक्षक द्वारा दिये गये पांच रागों में से किसी एक राग की गायकी/तंत्रकारी के साथ प्रस्तुति।

3 पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से एक ध्रुपद या धमार, तराना का प्रदर्शन। वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये तीनताल के अतिरिक्त किसी रचना अथवा धुन का प्रदर्शन।

## संदर्भ ग्रंथ


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9. हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10. चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11. संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12. भारतीय संगीत का इतिहास – श्री उमेश जोशी
13. निबंध संगीत – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
14. निबंध संगीत – श्री आर. एन. अग्निहोत्री
15. तन्त्री वादन की वादन कला – डॉ. प्रकाश महाडिक

# एम.म्यूज.–गायन / स्वरवाद्य
# द्वितीय सेमेस्टर–प्रथम प्रश्न पत्र सैद्धांतिक
# भारतीय संगीत का इतिहास

सी सी ई (15+15=30)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 70

इकाई–1

1. वैदिक कालीन संगीत, रामायण कालीन संगीत व महाभारत कालीन संगीत अध्ययन।
2. मौर्य कालीन तथा गुप्त कालीन संगीत अध्ययन।

इकाई–2

1. संगीत रत्नाकर एवं बृहददेशी ग्रंथों की विषय सामग्री व ग्रंथों का परिचय।
2. भारतीय संगीत की दो धाराओं गांधर्व एवं गान तथा मार्ग एवं देशी का विस्तृत अध्ययन।

इकाई–3

1. मूर्च्छना की परिभाषा व प्रकार। वर्तमान में प्रचलित किसी एक थाट से मूर्च्छना के आधार पर अन्य थाटों की उत्पत्ति।
2. स्वर प्रस्तार, खण्ड मेरू, नष्ट एवं उदिष्ट विधि का अध्ययन।

इकाई–4

1. भारतीय संगीत में वाद्यों के वर्गीकरण के आधार पर तत् व वितत् वाद्यों का स्पष्टीकरण।
2. मध्यकालीन ग्रंथों के आधार पर एकतंत्री, आलापनी, किन्नरी, त्रित्रंती, पिनाकी वाद्यों का अध्ययन।

इकाई–5

1. उ. जिया मोईउद्दीन डागर, राजा नवाब अली, पं. रामचतुर मलिक, उ. बहराम खॉं, पं. भीमसेन जोशी, संत त्यागराज का जीवन परिचय व सांगीतिक योगदान।

## एम.म्यूज.–गायन / स्वरवाद्य
## द्वितीय सेमेस्टर– द्वितीय प्रश्न पत्र सैद्धांतिक
## निबंध,सांगीतिक रचना एवं राग विवरण

सी सी ई (15+15=30)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 70

इकाई–1

1. न्यूनतम 600 शब्दों में संगीत विषयक निबंध लेखन।

इकाई–2

1. दिये गये पद्यांश अथवा वाद्यगत बोल रचना को पाठ्यक्रम के उपयुक्त राग व ताल में चुनकर उसमें निबद्ध करना।

इकाई–3

1. निम्नलिखित रागों का विवेचनात्मक अध्ययन।
   अहीर भैरव, देसी, जोग, कलावती, हंसध्वनि, देवगिरी बिलावल, बिलासखानी तोडी, नंद, बैरागी भैरव एवं भैरवी।

## एम.म्यूज.–गायन / स्वरवाद्य
## द्वितीय सेमेस्टर– तृतीय प्रश्न पत्र सैद्धांतिक
## संगीत शास्त्र के क्रियात्मक सिद्धांत

सी सी ई (15+15=30)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 70

इकाई–1

1. पं. भातखण्डे जी द्वारा निर्दिष्ट हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के सर्वसाधारण नियम।
2. निम्नलिखित रागांगों का विशेष अध्ययन।
   कल्याण व बिलावल इन अंगों के अंतर्गत आने वाले रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

इकाई–2

1. भारतीय संगीत के सप्तक का विकास।
2. स्वर गुणांतर, स्वर संवाद, षड्ज मध्यम व षडज पंचम भाव से सप्तक की रचना।

इकाई–3

1. हारमनी व मैलोडी का अध्ययन।
2. घराने का महत्व तथा दिल्ली, किराना व जयपुर घरानों का विशेष अध्ययन।

इकाई–4

2. रस की परिभाषा एवं स्वर व रस का पारस्परिक संबंध।
3. रूद्रवीणा, सितार, सुरबहार, सारंगी, शहनाई वाद्यों की उत्पत्ति और विकास।

इकाई–5

1. सौंदर्यशास्त्र – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।
2. सेनिया घराने के मुख्य कलाकारों का परिचय।

## एम.म्यूज.–गायन / स्वरवाद्य
## द्वितीय सेमेस्टर
## प्रायोगिक–वायवा

बाह्य मूल्यांकन : 80
आंतरिक मूल्यांकन : 20
पूर्णांक : 100

1. निम्नलिखित रागों में से किन्हीं छः रागों में एक बडा ख्याल या विलम्बित रचना, एक छोटा ख्याल या मध्य लय की रचना विस्तृत गायकी या तंत्रकारी सहित प्रस्तुत करना। राग : – अहीर भैरव, देसी, जोग, कलावती, हंसध्वनि, देवगिरी बिलावल, बिलासखानी तोडी, नंद, बैरागी भैरव, भैरवी एवं पीलू।
2. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से एक ध्रुपद, एक धमार, उपज एवं लयकारी सहित प्रस्तुत करना।
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में एक तराना, त्रिवट या चतुरंग अथवा टप्पा या ठुमरी प्रस्तुत करना। वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये त्रिताल के अतिरक्ति किन्हीं अन्य दो तालों में विस्तृत तंत्रकारी सहित रचना प्रस्तुत करना।
4. अपने वाद्य को मिलाने का अभ्यास एवं राग पहचान।

## प्रायोगिक–मंच प्रदर्शन

बाह्य मूल्यांकन : 80
आंतरिक मूल्यांकन : 20
पूर्णांक : 100

1. परीक्षार्थी द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम में से कोई एक राग चुनकर बडा ख्याल या विलम्बित रचना, छोटा ख्याल या द्रुत लय की रचना को विस्तृत गायकी / तंत्रकारी सहित प्रस्तुतिकरण।
2. पाठ्यक्रम में निर्धारित परीक्षक द्वारा दिये गये पांच रागों में से एक राग की प्रस्तुति।
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों मे से किसी एक राग में ठुमरी, टप्पा, भजन अथवा धुन का प्रदर्शन।

## संदर्भ ग्रंथ


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9. हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10. चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11. संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12. भारतीय संगीत का इतिहास – श्री उमेश जोशी
13. निबंध संगीत – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
14. निबंध संगीत – श्री आर. एन. अग्निहोत्री
15. तन्त्री वादन की वादन कला – डॉ. प्रकाश महाडिक

# एम.म्यूज.–गायन/स्वरवाद्य
# तृतीय सेमेस्टर– प्रथम प्रश्न पत्र सैद्धांतिक
# भारतीय संगीत का इतिहास

सी सी ई (15+15=30)
पूर्णांक : 70

इकाई–1

1. मुगलकालीन संगीत की ऐतिहासिक जानकारी।
2. श्रुति और स्वर का सम्बन्ध एवं श्रुति एवं स्वर पर विभिन्न अलंकारों के विचार।

इकाई–2

1 भरत तथा षारंगदेव के शुद्ध विकृत स्वरों का अध्ययन।
2 रामामात्य एवं व्यंकटमखी के शुद्ध स्वरों का अध्ययन।

इकाई–3

1 प्रबंध की परिभाषा एवं प्रकार।
2 प्रबंध के धातु एवं अंगों का परिचय।

इकाई–4

1 ध्रुपद धमार की उत्पत्ति संबंधी जानकारी।
2 ध्रुपद का विकास एवं उनकी बानियों की जानकारी।

इकाई–5

1 मध्ययुग में भारतीय संगीत पर विदेशी संगीत के प्रभाव का अध्ययन।
2 स्वरमेल कलानिधि, राग तरंगिणी ग्रंथों का परिचय।

## एम.म्यूज.–गायन / स्वरवाद्य
## तृतीय सेमेस्टर– द्वितीय प्रश्न पत्र
## निबंध रचना–राग विवरण

सी सी ई (15+15=30)
पूर्णांक : 70

इकाई–1

1 न्यूनतम 600 शब्दों में सांगीतिक विषय पर निबंध।

इकाई–2

1 दिये गये पद्यांश या वाद्यगत बोल रचना को पाठ्यक्रम के उपयुक्त राग एवं ताल में निबद्ध करना।

इकाई–3

1 पाठ्यक्रम के रागों में आलाप लेखन।
2 पाठ्यक्रम के रागों का तुलनात्मक अध्ययन।

## एम.म्यूज.–गायन / स्वरवाद्य
## तृतीय सेमेस्टर –तृतीय प्रश्न पत्र
## संगीत शास्त्र के क्रियात्मक सिद्धांत

सी सी ई (15+15=30)
पूर्णांक : 70

इकाई–1

1 राग रागिनी वर्गीकरण का अध्ययन।
2 मेल राग वर्गीकरण का अध्ययन।

इकाई–2

1 ख्याल गाायन के आगरा एवं ग्वालियर घरानों का परिचय एवं उनकी गायन शैली की विस्तृत जानकारी।
2 भारतीय संगीत में वृंदगान एवं वृंदवादन।

इकाई–3

1 आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक वाद्य यंत्रों की सचित्र जानकारी।
2 हिन्दुस्तानी वाद्य वर्गीकरण का सामान्य परिचय।

इकाई–4

1 रूद्रवीणा, सितार, सुरबहार की उत्पत्ति एवं विकास की जानकारी।
2 सौंदर्य शास्त्र का परिचय।

इकाई–5

1 रस की परिभाषा एवं उसके भेदों का सामान्य अध्ययन।
2 रस एवं संगीत का संबंध एवं इस विषय पर आधुनिक विचार।

## एम.म्यूज.–गायन / स्वरवाद्य
## तृतीय सेमेस्टर–प्रायोगिक / मौखिक (वायवा)

पूर्णांक : 100

1. निम्नलिखित रागों में से 6 रागों में विलम्बित ख्याल / मसीतखानी गत एवं सभी रागों में मध्यलय ख्याल / रजाखानी गत की रचना (विस्तृत गायकी या तंत्रकारी के साथ )
   झिंझोटी, अल्हैया बिलावल, नट भैरव, भूपाल तोडी, मियॉ की तोडी, आभोगी – कान्हडा, मध्यमाद सारंग, मियॉ मल्हार।

2 उपरोक्त रागों में से दो ध्रुपद एवं दो धमार। लयकारी सहित दो तराने गायकी सहित / वाद्य के विद्यार्थियों के लिये तीनताल के अतिरिक्त अन्य 2 तालों में रचना एवं धुन।

## प्रायोगिक–मंच प्रदर्शन

पूर्णांक : 100

1. परीक्षार्थी द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम में से कोई एक राग इच्छानुसार चुनकर 20 मिनिट में बडा ख्याल / मसीतखानी गत का प्रदर्शन।

2. परीक्षक द्वारा दिये गये पॉच रागों में से किसी एक राग की प्रस्तुति।

3. ठुमरी–दादरा की प्रस्तुति – राग तिलंग, खमाज, काफी।
   वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये किसी एक धुन का प्रदर्शन।

## संदर्भ ग्रंथ


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9. हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10. चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11. संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12. भारतीय संगीत का इतिहास – श्री उमेश जोशी
13. निबंध संगीत – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
14. निबंध संगीत – श्री आर. एन. अग्निहोत्री
15. तन्त्री वादन की वादन कला – डॉ. प्रकाश महाडिक

## एम.म्यूज.–गायन / स्वरवाद्य
## चतुर्थ सेमेस्टर–प्रथम प्रश्न पत्र
## भारतीय संगीत का इतिहास

सी सी ई (15+15=30)
पूर्णांक : 70

इकाई–1

1. श्रुतियों के विभिन्न माप, प्रमाण श्रुति, उपमहति श्रुति और महति श्रुति का अध्ययन।
2. व्यंकटमखी और अहोबल के शुद्ध एवं विकृत स्वरों का अध्ययन।

इकाई–2

1. ध्रुपद–धमार की उत्पत्ति एवं दरभंगा, डागर, विष्णुपुर और हवेली संगीत का अध्ययन।
2. ध्रुपद शैली का ख्याल और वादन की शैलियों पर हुए प्रभाव का अध्ययन।

इकाई–3

1 संगीत पारिजात एवं चर्तुदण्डि प्रकाशिका ग्रंथों का परिचय।
2 मार्ग एवं देशी ताल पद्धति का परिचय।

इकाई–4

2 ताल के दस प्राणों का अध्ययन।
3 कर्नाटक संगीत पद्धति के प्रमुख गीत प्रकारों का अध्ययन।

इकाई–5

1 अष्टछाप के संत कवियों के संगीत संबंधी विषयों का परिचय।
2 सांगीतिक योगदानः– पं. ओंकारनाथ ठाकुर, पं. कुमार गंधर्व, पं. राजाभैया पूछवाले, पं. कृष्णराव शंकर पंडित

## एम.म्यूज.–गायन / स्वरवाद्य
## चतुर्थ सेमेस्टर–द्वितीय प्रश्न पत्र
## निबंध रचना एवं राग विवरण

सी सी ई (15+15=30)
पूर्णांक : 70

इकाई–1

1 न्यूनतम 600 शब्दों में सांगीतिक विषय पर निबंध।

इकाई–2

1 दिये गये पद्यांश या वाद्य गत बोल रचना को पाठ्यक्रम के उपयुक्त राग एवं ताल में निबद्ध करना।

इकाई–3

1. पाठ्यक्रम के रागों में आलाप लिखना।
2. पाठ्यक्रम के रागों का तुलनात्मक अध्ययन।

# एम.म्यूज.–गायन / स्वरवाद्य
# चतुर्थ सेमेस्टर–तृतीय प्रश्न पत्र
# संगीत के क्रियात्मक सिद्धांत

सी सी ई (15+15=30)
पूर्णांक – 70

इकाई–1

1 रागांग वर्गीकरण के अंतर्गत सारंग एवं मल्हार रागांगों का अध्ययन।
2. रागांग वर्गीकरण के अंतर्गत कान्हडा रागांगों का अध्ययन।

इकाई–2

1 थाट राग वर्गीकरण का अध्ययन।
2 गणितानुसार हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के 32 एवं कर्नाटक संगीत के 72 मेलों की निर्माण विधि। स्वरों की संख्या के आाधार पर एक राग से 484 राग बनाने की विधि।

इकाई–3

1. संगीत और सौंदर्यशास्त्र का पारस्परिक संबंध।
2. शोध प्राविधि का सामान्य अध्ययन।

इकाई–4

1. आड, कुआड एवं बिआड की उदाहरण सहित व्याख्या।
2 भारतीय संगीत में उपयोग आने वाले वाद्यों का सचित्र वर्णन।

इकाई–5

1 भारतीय संगीत में शोध की दशाएँ।
2 भारतीय शास्त्रीय संगीत पर विदेशी संगीत का प्रभाव।

## एम.म्यूज.–गायन / स्वरवाद्य
## चतुर्थ सेमेस्टर
## प्रायोगिक–वायवा

बाह्य मूल्यांकन : 80
आंतरिक मूल्यांकन : 20
पूर्णांक : 100

1 निम्नलिखित रागों में से 6 रागों में विलम्बित ख्याल एवं छोटे ख्याल / मसीतखानी गत, रजाखानी गत की प्रस्तुति (विस्तृत गायकी या तंत्रकारी के साथ)।
1. कौंसी कान्हडा 2. दरबारी कान्हडा 3. मेघ 4. गौड मल्हार 5. जोगकौंस
6. मधुकौंस 7. रागेश्री 8. विभास 9. भटियार 10. मधुवंती।

2 उपरोक्त रागों में से दो ध्रुपद, दो धमार, लयकारी सहित एवं दो तराने गायकी सहित। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये तीनताल के अतिरिक्त तीन विभिन्न तालों में रचना या धुन।

## प्रायोगिक–मंच प्रदर्शन

पूर्णांक : 100

1 परीक्षार्थी द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम में से कोई एक राग इच्छानुसार चुनकर 20 मिनिट मे बडा ख्याल, मसीतखानी गत का प्रदर्शन।
2 परीक्षक द्वारा दिये गये 5 रागों में से किसी एक राग की प्रस्तुति।
3 ठुमरी–दादरा की प्रस्तुति।
पहाडी, शिवरंजनी, किरवाणी।
वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये किसी एक धुन का प्रदर्शन।

## संदर्भ ग्रंथ


1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9. हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10. चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11. संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12. भारतीय संगीत का इतिहास – श्री उमेश जोशी
13. निबंध संगीत – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
14. निबंध संगीत – श्री आर. एन. अग्निहोत्री
15. तन्त्री वादन की वादन कला – डॉ. प्रकाश महाडिक

# एम.ए./एम.म्यूज अंतिम वर्ष (स्वाध्यायी)

## विषयः– गायन/स्वरवाद्य

## प्रथम प्रश्नपत्र

## भारतीय संगीत का इतिहास

समयः– 3 घण्टे पूर्णांक–100

1. श्रुति और स्वर का संबंध तथा श्रुति और स्वर पर विभिन्न ग्रंथकारों के विचार। श्रुतियों के विभिन्न नाप (प्रमाण श्रुति उपमहती श्रुति और महती श्रुति)। भरत, शारंगदेव, रामामात्य, व्यकंटमखी और अहोबल के शुद्ध विकृत स्वरों का अध्ययन।
2. प्रबंध की परिभाषा एवं प्रकार । प्रबंध के धातु एवं अंगों का परिचय। ध्रुपद–धमार की उत्पत्ति एवं विकास तथा ध्रुपद की बानियों एवं वर्तमान में प्रचलित परम्पराओं (दरभंगा, डागर, विष्णुपुर और हवेली) का अध्ययन। ध्रुपद शैली का ख्याल और वादन की शैलियों पर हुए प्रभाव का विवेचन।
3. मध्ययुग में भारतीय संगीत पर विदेशी संगीत के प्रभाव का अध्ययन। 'स्वरमेल कलानिधी' 'राग तरंगिणी', 'संगीत पारिजात' एवं 'चतुर्दण्डिप्रकाशिका', 'संगीत दर्पण' एवं 'रागविबोध' ग्रंथों का परिचय।
4. मार्ग ताल एवं देशी ताल पद्धति का परिचय एवं ताल के दस प्राणों का अध्ययन। कर्नाटक संगीत पद्धति के प्रमुख गीत प्रकारों का अध्ययन।
5. 'अष्टछाप' के संत कवियों के संगीत संबंधित विषयों का परिचय। अबुल फजल, सवाई प्रताप सिंह देव, विलियम जोन्स, कैप्टन विलर्ड, एस.एम.टैगोर, इ.क्लीमेंट्स, पंडित ओंकारनाथ ठाकुर, पं.कुमार गन्धर्व, उस्ताद अमीर खाँ (गायन), आचार्य बृहस्पति, श्री पी.साम्बामूर्ती और डॉ. प्रेमलता शर्मा द्वारा किये गये सांगीतिक कार्यो का परिचय।

# द्वितीय प्रश्नपत्र

## निबंध, सांगीतिक रचना एवं राग विवरण

समयः– 3 घण्टे पूर्णांक–100

1. न्यूनतम 600 शब्दों में संगीत विषयक निबंध।
2. दिये गये पद्यांश अथवा वाद्यगत बोल रचना को पाठ्यक्रम से उपयुक्त राग व ताल को चुनकर उसमें निबद्ध करना।
3. पाठ्यक्रम के रागो में उच्चस्तरीय आलाप लेखन।
4. तान एवं तिहाई रचना । (विभिन्न तालों में विभिन्न मात्राओं से भिन्न–भिन्न प्रकार की तान एवं तिहाई बनाकर स्वर ताल में निबद्ध करना)
5. निम्नलिखित रागों का विस्तृत शास्त्रीय विवरण तथा पूर्व पाठ्यक्रमों से समानता रखने वाले रागों के साथ तुलनात्मक अध्ययन–

   1. दरबारी कान्हड़ा 2. कौन्सी कान्हड़ा 3. आभोगी कान्हड़ा 4. नायकी कान्हड़ा 5. मियाँ की मल्हार 6 गौंड मल्हार 7. मेघ मल्हार 8. शुद्ध सारंग 9. मध्यमाद सारंग 10. गौड सारंग 11. रागेश्री 12. जोग कौन्स 13. मधुकौन्स 14. मधुवन्ती 15. कोमल रिषभ आसावरी 16. भटियार 17. गुणकली (गुणक्री भैरव थाट) 18. विभास (भैरव थाट) 19. परज।
6. राग देश, तिलंग, भैरवी एवं पीलू में से किसी एक राग में टप्पा या ठुमरी।

# तृतीय प्रश्नपत्र

## संगीत शास्त्र के क्रियात्मक सिद्धांत

समयः– 3 घण्टे पूर्णांक–100

1. राग–रागिनी वर्गीकरण, मेल राग वर्गीकरण एवं थाट–राग वर्गीकरण का अध्ययन। रागांग वर्गीकरण के अंतर्गत सारंग, मल्हार एवं कान्हड़ा रागागों का अध्ययन।
2. ख्याल गायन के आगरा, किराना तथा जयपुर घरानों का परिचय एवं उनकी गायन शैलियों का अध्ययन। बाबा उस्ताद अलाउद्दीन खॉ का (सितार–सरोद) घराना, उस्ताद मुश्ताक अली खॉ का (सितार) घराना एवं प्रमुख सारंगी, बेला (वायलिन) तथा बाँसुरी वादकों का शैलीगत परिचय एवं उनका सांगीतिक योगदान।
3. भारतीय संगीत में वृन्दगान एवं वृन्दवादन। रूद्रवीणा, सितार, सुरबहार, सारंगी, शहनाई वाद्यों की उत्पत्ति और विकास का अध्ययन। आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों की जानकारी।
4. सौन्दर्य शास्त्र का परिचय, कला की परिभाषा, कलाओं की संख्या और प्रकार। रस की परिभाषा व भेदों का सामान्य अध्ययन। रस और संगीत का संबंध तथा इस विषय पर आधुनिक विचारधारा का अध्ययन।
5. शोध प्रविधि का सामान्य अध्ययन– अनुसंधान की परिभाषा एव प्रक्रिया । भारतीय संगीत में शोध की दिशाएं। शोध विषय का चयन। शोध विषय की रूपरेखा। ग्रन्थ सूची।

# एम.ए./एम.म्यूज अंतिम वर्ष (स्वाध्यायी)

## विषयः– गायन/स्वरवाद्य

## प्रायोगिक

समयः– 1 घण्टे पूर्णांक–300

1. निम्नलिखित रागों का विस्तृत शास्त्रीय परिचय तथा पूर्व पाठ्यक्रमों से समानता रखने वाले रागों के साथ तुलनात्मक अध्ययन– निम्नलिखित 8 रागों मे से एक बडा ख्याल या विलम्बित रचना (गत ) तथा एक छोटा ख्याल या मध्यलय की रचना (गत) की विस्तृत गायकी या तंत्रकारी सहित प्रदर्शन–

अ– 1. दरबारी कान्हड़ा, 2. मियॉ मल्हार 3. शुद्ध सारंग 4. रागेश्री 5. जोग कौन्स, 6. भटियार 7. कौन्सी कान्हड़ा 8. गौड़ सारंग।

ब– निम्नलिखित रागों का सामान्य ज्ञान एवं मध्यलय की रचना का आलाप–तान सहित प्रदर्शन–

1. आभोगी कान्हड़ा 2. नायकी कान्हड़ा 3. गौड मल्हार 4. मेघ मल्हार 5. मध्यमादी सारंग 6. मधुकौन्स 7. मधुवन्ती 8. कोमल रिषभ आसावरी 9. गुणकली (गुणक्री भैरव थाट) 10. विभास (भैरव) 11. परज।

स– राग देश, तिलंग, भैरवी एवं पीलू में से किसी एक राग में ठुमरी का गायन। वाद्य के विद्यार्थी द्वारा इन रागों मे से किसी एक राग में ठुमरी शैली का वादन या धुन का प्रदर्शन ।

2. उपर्युक्त रागों मे से एक ध्रुपद एक धमार (उपज सहित) एवं एक तराने, त्रिवट/चतुरंग का विस्तृत गायकी सहित प्रदर्शन अथवा अपने वाद्य पर तीनताल से पृथक अन्य दो तालों में रचनाओं का आलाप–तान सहित वादन।

# मंच प्रदर्शन

पूर्णांक–150

1. परीक्षार्थी द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम में से कोई एक राग इच्छानुसार चुनकर 30 मिनिट में विलंबित एवं मध्यलय की रचना का (विस्तृत गायकी/तन्त्रकारी सहित) प्रदर्शन।
2. परीक्षक द्वारा दिये गये पांच रागों में से किसी एक राग की गायकी/तन्त्रकारी के साथ प्रस्तुति।
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से किसी एक राग में ठुमरी, टप्पा अथवा ठुमरी शैली पर आधारित रचना अथवा धुन का प्रदर्शन।